काव्य लक्ष्मी

साझा काव्य संकलन

संकलक

राम प्रकाश गहोई

(पूर्व मुख्य प्रबंधक : पंजाब नेशनल बैंक)

काव्य लक्ष्मी

(साझा काव्य संकलन)

संकलक

राम प्रकाश गहोई

(पुर्व मुख्य प्रबंधक : पंजाब नेशनल बैंक)

साहित्य संगम बुक्स

काव्य लक्ष्मी

साझा काव्य संकलन

- प्रकाशन : साहित्य संगम बुक्स।
- संकलक : राम प्रकाश गहोई।
- रूप सज्जा : अमित पाठक शाकद्वीपी।
- मुद्रण : नई दिल्ली।
- संस्करण : प्रथम, 2025।
- ISBN : 978-81-986491-1-9।

- © सर्वाधिकार सुरक्षित।

ISBN: 978-8-19864-911-9

9 788198 649119

मूल्य : ३९९.०० /-

साहित्य संगम बुक्स

समर्पण

माता जी

"स्व. श्रीमती लक्ष्मी देवी जी"

के श्रीचरणों में सादर

समर्पित

आभार

प्रिय पाठकगण !

आपके समक्ष यह सुंदर देशभक्ति पर आधारित साझा संकलन प्रस्तुत करते हुए अति प्रसन्नता हो रही है। इस साझा संकलन प्रस्तुत करने की यात्रा बहुत ही रोचक ,अविस्मरणीय होकर नए नए अनुभव दे गई जिसकी खट्टी मीठी यादें अतीत के घेरे में अपनी मुस्कान लिए रहेंगी ।

काव्यलक्ष्मी जैसा सुंदर नाम मैने अपनी स्वरचित रचनाओं के लिए अपनी मां श्रीमती लक्ष्मी देवी को समर्पित करने के लिए सोचकर रखा था जिसके प्रकाशन की तैयारी चल रही थी लेकिन सिंदूर ऑपरेशन के बाद देश भक्ति की रचनाओं के साझा संकलन के लिए ये नाम मुझे उचित लगा जिसमें हमारे विद्वान साथी अपनी लेखनी से इस सुंदर पुस्तक में देश के प्रति अपनी रचनाएं समर्पित करेंगे ,आज ये साझा संकलन आप सबके समक्ष देश के प्रति अपनी भावनाओं और समर्पण के साथ प्रस्तुत है।

इस साझा संकलन में मेरे प्रेरणास्त्रोत विद्वानों,मार्गदर्शन करने वाले गुरुजनों,मेरे सृजनशील साथियों को मेरा हृदय से नमन जिन्होंने अपनी सुंदर लेखनी से देश भक्ति जैसे महान विषय पर इस काव्य संकलन का मान बढ़ाया है तथा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धि में सुचिता प्रदान की है ।

इस अवसर पर मैं अपनी मां श्रीमती लक्ष्मी देवी एवं पिता श्री जगदीश नारायण गहोई को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए हृदय से नमन करता हूं। मैं अपने प्रिय परिजनों , आत्मीयजनों,मित्रों को भी हृदय तल से आभार प्रस्तुत करता हूं जिनकी प्रेरणा और स्नेह ने इस सुंदर कृति को पूर्णता तक पहुंचाने में साहस और सामर्थ्य दिया।

ये एक साझा संकलन ही नहीं बल्कि सामूहिक श्रम विचार और भावनाओं की परिणीति है।पुस्तक का संकलन से लेकर तकनीकी रूप देने एवं प्रकाशन तक जो समय एवं श्रम सभी साथियों ने दिया है उन सभी का हृदय से आभार।

देशभक्ति हर वो काम है जिससे देश की उन्नति हो देश के लोग खुशहाल हों , जो भी व्यक्ति अपने कर्तव्यों का निर्वाहन ईमानदारी से करता है वो देश भक्त की श्रेणी में आता है । देशभक्ति के लिए जो जवान सीमा पर अपने त्याग से हमारी रक्षा करते है उन सभी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूं और जो देशभक्ति पर अपनी जान निछावर कर देते हैं उन सभी को श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं ।

मेरे प्रिय पाठक गण आप सभी की रुचि,उत्सुकता और समर्थन इस काव्य संकलन की आत्मा है जिसके लिए मैं आपके प्रति कृतज्ञ हूं जो आपने अपना महत्वपूर्ण समय इसे पढ़ने के लिए निकाला । आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि यह संकलन आपके हृदय को छूने और आपकी विचारशीलता तथा देश भक्ति को प्रेरित करने में सफल रहेगा ।

आप सभी का हार्दिक आभार।

राम प्रकाश गहोई
संकलक

शुभकामना संदेश

आदरणीय **राम प्रकाश गहोई सर,**
"काव्यलक्ष्मी साझा संग्रह" जैसी साहित्यिक पहल के माध्यम से आपने जो राष्ट्रभक्ति जैसे पावन विषय को कविता के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया है, वह वास्तव में प्रशंसनीय और प्रेरणास्पद है। इस संकलन के माध्यम से देशभर के रचनाकारों को एक सशक्त मंच मिल रहा है, जहाँ वे अपनी अभिव्यक्तियों को राष्ट्र के प्रति समर्पित कर सकेंगे।

आपकी यह लगन, समर्पण और साहित्य के प्रति अगाध निष्ठा, नई पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगी।
आपने केवल एक पुस्तक नहीं बनाई, बल्कि विचारों, भावनाओं और देशप्रेम की एक जीवंत धारा प्रवाहित की है।

आपका यह कार्य साहित्यिक जगत में एक अमिट छाप छोड़ेगा, और हम सभी की ओर से आपके इस प्रयास को कोटिशः शुभकामनाएँ और अभिनंदन।

“शब्दों से सजाया है आपने, राष्ट्रभक्ति का नव श्रृंगार,
'काव्यलक्ष्मी' बन चली है, साहित्यिक दीपों की कतार।
गहोई जी के हाथों में, प्रेरणा की कलम चलती है,
हर पंक्ति में भारत माता, मुस्काती-सी लगती है।”

आपका साहित्यिक यज्ञ सफल हो, और "काव्यलक्ष्मी" अमर काव्य-धरोहर बने यही हमारी शुभकामना है।

डॉ बीएल सैनी
प्राचार्य
श्री आदर्श महिला बीएड कॉलेज
श्रीमाधोपुर (सीकर) राजस्थान

संकलक परिचय

- **शुभ नाम : श्री राम प्रकाश गहोई।**
- **पिता जी का नाम : स्व. जगदीश नारायण गहोई।**
- **माता जी का नाम : स्व. लक्ष्मी देवी गुप्ता।**
- **धर्मपत्नी : श्रीमती ममता गहोई।**
- **जन्म स्थान -औरैया (उ.प्र.)**
- **शिक्षा -एम.ए.(अर्थशास्त्र), स्नातक (गणित), सी.ए.आई.आई.बी., एम. डी. आई.– गुड़गांव से एग्जीक्यूटिव डिवलेपमेंट प्रोग्राम।**
- **संप्रति-पूर्व मुख्य प्रबंधक -पी.एन. बी.(e-obc), इन्वेस्टमेंट सलाहकार।**
- **अभीरुचि-सामाजिक कार्य, लेखन,गायन,मोटिवेशन,वृक्षारोपण इत्यादि**

विशेष उपलब्धियाँ

👉 "साहित्य बिभुषण" से सितंबर 2023 में सम्मानित।

👉 कलम वीर अलंकरण से 29 जनवरी 2025 को भोपाल में सम्मानित।

👉 साहित्य संगम बुक्स द्वारा जारी विभिन्न विषयों पर पद्य एवं गद्य लेखन के लिए 75 से अधिक प्रशस्ति पत्रक दिए जा चुके हैं ।

👉 लायंस क्लब ग्वालियर नार्थ का चार्टर 2010 में बनाकर चार्टर प्रेसिडेंट बना । लायंस क्लब इंटरनेशनल द्वारा विभिन्न अवॉर्ड के साथ साथ वृक्षारोपण हेतु प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया ।

👉 सामाजिक संस्था -गहोई वैश्य समाज की दीनदयाल नगर ग्वालियर की यूनिट सन 2000 में बनाकर फाउंडर प्रेसिडेंट बना तथा सामाजिक सेवाएं प्रदान करते हुए लगातार राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त जी का जन्म समारोह भव्यता के साथ आयोजित किया ।

👉आकाशवाणी शिवपुरी से दिनाँक 27/06/2007 को चार कविताओं -माटी की पुकार,पुनर्मिलन,यादें एवं टूटते रिश्ते का पाठन व प्रसारण हुआ ।

👉 बैंक /सामाजिक /स्थानीय समाचार पत्रों /पंजाब प्रांत के समाचार पत्रों एवं पत्रिका में कई कविताओं एवं लेखों का प्रकाशन हो चुका है ।

👉प्रतिलिपि में विभिन्न कविताओं एवं कहानी का संकलन है जिसे देखा व पढ़ा जा सकता है ,इसके अलावा 2019-20 में टॉप 10 में भी स्थान बनाने में सफल रहा ।

👉 बैंक में रहते हुए हिंदी भाषा हेतु कार्य किया तथा 2019-20 में ओ बी सी इंदौर पोस्टिंग के दौरान "ई पत्रिका " "मालवांचल सुधा" हेतु विशेष प्रयास करके 2019 अपने संरक्षण में निकलवाने में सफल रहा तथा पी एन बी की ई पत्रिका "पी एन बी स्पंदन" को निकालने में भी विशेष मार्गदर्शन दिया।

स्वतंत्रता दिवस समारोह 2009 में माननीय कलेक्टर शिवपुरी द्वारा बैंक की विभिन्न सरकारी ऋण योजनाओं में सराहनीय कार्य करने के लिए सम्मान करते हुए प्रशस्ति पत्र दिया गया ।

👉कहानी-गुरुपूर्णिमा,पिंजड़े का पँछी, "एक पेड़ की आत्मकथा" विभिन्न स्तर पर कई बार प्रकशित हो चुकी है तथा लोंगों द्वारा पसंद भी की गई है ।

👉 अभी तक चार साझा संकलन " छिटक रही चांदनी" एवं "उर्जिता" व साहित्य संगम बुक्स द्वारा"अपनों की बात" तथा " उनसे इश्क करके " प्रकाशित हो चुकी हैं ।

👉 लेखन रुचि बचपन से होकर 1980 से प्रारंभ होकर समय समय पर नौकरी के दौरान व्यस्तता के बीच लेखन कार्य किया एवं 2007 से लगातार जारी है ।

- **वर्तमान निवास : BM 397, दीन दयाल नगर, ग्वालियर, मध्य प्रदेश।**

प्रतिलिप्याधिकार

यह काव्य संकलन विभिन्न कवियों की मौलिक रचनाओं का संग्रह है, जो उनकी व्यक्तिगत भावनाओं, विचारों और अनुभवों का प्रतिबिंब हैं। संग्रह में शामिल सभी कविताएँ और सामग्रियों पर संबंधित कवियों और प्रकाशक का पूर्ण बौद्धिक अधिकार सुरक्षित है। इनका किसी भी रूप में पुनरुत्पादन, प्रकाशन, या व्यावसायिक उपयोग बिना लेखकों और प्रकाशक की लिखित अनुमति के सख्त निषिद्ध है। इस संग्रह का संकलन, संपादन, और प्रकाशन का कॉपीराइट साहित्य संगम बुक्स के पास सुरक्षित है। किसी भी प्रकार का अनाधिकृत उपयोग भारतीय कॉपीराइट अधिनियम, 1957 और अन्य प्रासंगिक कानूनों का उल्लंघन माना जाएगा, जिसके लिए कानूनी कार्यवाही की जा सकती है।

पाठकों से अनुरोध है कि इस संग्रह का उपयोग केवल निजी अध्ययन और साहित्यिक उद्देश्य से करें। यदि किसी भी सामग्री को उद्धृत या संदर्भित करना हो, तो लेखक और पुस्तक को उचित श्रेय देना अनिवार्य है। इस पुस्तक की कोई भी सामग्री व्यक्तिगत अध्ययन, शोध या समीक्षा के उद्देश्य से सीमित उपयोग के लिए अनुमति प्राप्त कर सकती है, लेकिन व्यावसायिक उपयोग या वितरण के लिए पूर्व अनुमति आवश्यक है।

इस पुस्तक का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना है। किसी भी सामग्री के उपयोग के लिए अनुमति प्राप्त करने के लिए कृपया नीचे दिए गए संपर्क विवरण पर संपर्क करें।

संपर्क:

साहित्य संगम बुक्स

स्टॉफ क्वार्टर ढोरी, फुसरो, बोकारो

झारखंड – 825102

वेबसाईट : www.sahityasangambooks.in

ईमेल : sahityasangambooks2@gmail.com

अस्वीकरण

यह संकलन विभिन्न लेखकों और कवियों की कल्पनाओं, अनुभवों, और विचारों का संग्रह है। इसमें व्यक्त की गई राय और भावनाएँ पूरी तरह से लेखकों की अपनी हैं और आवश्यक नहीं है कि वे संपादक, प्रकाशक, या अन्य संबंधित व्यक्तियों के दृष्टिकोण या मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करती हों।

इस पुस्तक में शामिल रचनाएँ साहित्यिक और रचनात्मक उद्देश्य से प्रस्तुत की गई हैं। यदि कोई सामग्री किसी पाठक को असुविधाजनक लगे या उनके विचारों से मेल न खाए, तो यह संयोगवश है और इसका उद्देश्य किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाना नहीं है।

पाठकों से अनुरोध है कि इस संग्रह को साहित्यिक दृष्टि से देखें और इसे खुले मन से पढ़ें।

सादर
साहित्य संगम बुक्स

भारत सरकार
Government of India
Ministry of Micro, Small and Medium Enterprises

UDYAM REGISTRATION CERTIFICATE

- Udyam Reg. No. : UDYAM-JH-01-0024515
- Date of Udyam Reg. : 03/06/2023
- Name of Enterprise : SAHITYA SANGAM
- Social Category of Enterepreneur : General
- Type of Enterprise : Micro

NAME OF UNIT(S)
Sahitya Sangam Books
(Owned by : Amit Pathak)

OFFICAL ADDRESS OF ENTERPRISE
Flat/Door/Block No. 1004
Name of Premises/ Building : Staff Quarter Dhori
Village/Town : Phusro Block : Bermo
Road/Street/Lane : Near Dhori Pani Tanki City : Bokaro
State : JHARKHAND District : BOKARO , Pin : 825102
Mobile : 8935857296 Email : sahityasangambooks@gmail.com
Website : www.sahityasangambooks.in

भारत सरकार
Government of India
Goods and Service Tax

REGISTRATION CERTIFICATE

- Registration Number : 20CGKPP7865A1ZF
- Legal Name : Amit Pathak
- Trade Name, if any : Sahitya Sangam Books
- Jurisdictional Office : Tenughat
- Date of issue of Certificate : 11/11/2023

This is a system generated digitally signed Registration Certificate issued based on the approval of application granted on 11/11/2023 by the jurisdictional authority.

अनुक्रमणिका

क्र. सं. सहयोगी कलमकार पृष्ठ क्रमांक

1. श्री राम प्रकाश गहोई जी 10
2. श्री महेन्द्र भट्ट जी 17
3. श्री अमित पाठक शाकद्वीपी जी 20
4. श्रीमती नीरजा वर्मा जी 23
5. श्री राज शारदा जी 26
6. श्री विजय डांगे जी 31
7. श्रीमती हेमलता साहूकार जी 34
8. श्री अनिल राही जी 37
9. डॉ अल्पना वर्मा जी 42
10. डॉ रुपाली गर्ग जी 45
11. डॉ बलवंत सिंह राणा जी 48
12. श्रीमती हेमा कारीकांत जी 52
13. श्रीमती मनीषी सिन्हा जी 55
14. श्रीमती वसुधा श्रीवास्तव जी 58
15. सूबेदार राम स्वरुप कुशवाह जी 61
16. श्रीमती संध्या मिश्रा 'मयूरी' जी 64
17. श्रीमती सरिता गुप्ता जी 67
18. श्रीमती अवंतिका विशाल "अवि" जी 70
19. श्री जगदीश प्रसाद गबेल जी 73
20. डॉ शरद शर्मा जी 76
21. श्रीमती दिशा मिश्रा जी 79
22. श्री रमापति मौर्य जी 82
23. श्रीमती पुष्पलता जी 85
24. श्री तुलसीराम 'राजस्थानी' जी 90
25. श्री मनोज मंजुल जी 93
26. श्री विद्यानंद वागद्रे आनंद जी 97
27. श्री राजेन्द्र कुमार सैनी जी 100
28. श्रीमती मोनिका डागा आनंद जी 103
29. श्री लोकेश कौशिक जी 106
30. प्रो. विमल शर्मा जी 109
31. डॉ चन्द्र शेखर सिंह जी 112
32. श्रीमती नीना श्रीवास्तव जी 115
33. श्रीमती नीलम सगोरिया जी 118
34. श्री भगवान दास शर्मा प्रशांत जी 121
35. श्री उम्मेद सिंह भाटी जी 125
36. श्रीमती मंजू शर्मा जी 128

सरस्वती वन्दना

हे वीणा वरदायिनी सरस्वती माँ,
तुमको कोटि प्रणाम है ।
बुध्दि सद्बुध्दि दो जीवन में,
ये जीवन का अभिप्राण है ।।

बुध्दि की पूजा जो करते,
वो विवेक के स्वामी हैं ।
जिसको सुख मिलता है,
वो मानव श्रमदानी हैं ।।

मुझ पर थोड़ी कृपा करो माँ,
बुध्दि की सौगात खिले ।
हर निर्णय उत्तम हो जाए,
बुध्दिमान हों मान मिले ।।

हम सब तेरे बच्चे हैं माँ,
वीणा की संगत भी दे दो ।
सुर ताल मिले जीवन में,
संगीत भरी खुशियां दे दो ।।

कृपा करो हे माँ सरस्वती ।
वीणा मय संगीत भरो ।
हम तो तेरे बच्चे हैं माँ।
सद्बुध्दि से झोली भर दो।।

– राम प्रकाश गहोई

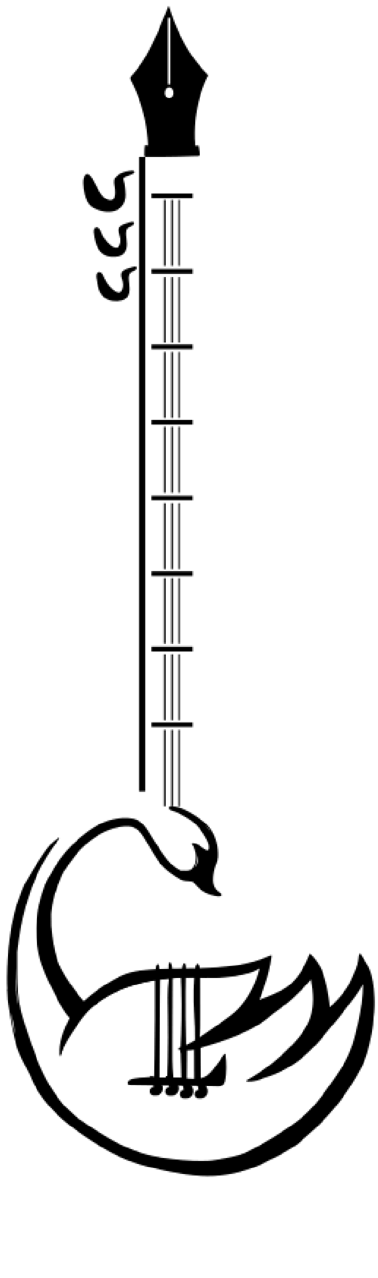

रचनाएँ

श्री राम प्रकाश गहोई

पूर्व मुख्य प्रबंधक : पंजाब नेशनल बैंक

स्वपरिचय

- माता का नाम : **स्व. लक्ष्मी देवी**।
- पिता का नाम : **स्व. श्री जे. एन. गहोई** ।
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातक, स्नातकोत्तर एवं CAIIB**।

निवास स्थान

- **ग्वालियर , मध्य प्रदेश**।

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों**।

साहित्यिक अनुभव

- **विगत कई वर्षों से लेखन**।

सत्यापन

मैं सत्यापित करता हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रहा हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

- **काव्य लक्ष्मी**

देश सेवा – देश भक्ति

दे सकें कुछ देश को ये ध्यान होना चाहिए।
देश भक्ति के लिए जज्बात होना चाहिए।
है जरूरी ये नहीं कि सभी सीमा पर लड़ें।
देश भक्ति के लिए कर्तव्य करना चाहिए।।

शांति का हो निकेतन सदभाव होना चाहिए।
प्रकृति को कैसे सवारें ये भाव होना चाहिए।
चारों सीमाएं हों सुरक्षित चाह होना चाहिए।
संस्कारों का हो समर्थन मान होना चाहिए।।

देश सेवा कर रहीं हैं बंदूक थामे बेटियां ।
जीते हैं सैनिक जहां हैं बर्फीली चोटियां ।
अपराध को थामे हैं पुलिस की टोलियां।
रात को घूमें वो गार्ड हैं बजाते सीटियां।।

देश सेवा को कृतज्ञ बैंक के वो कर्मचारी।
देश सेवा के लिए किसान भी हैं पुजारी।
देश सेवा में चिकित्सक दे रहे सेवाएं जो।
देश सेवा में विज्ञानी करते नई खोज को।।

देश सेवा के लिए आयाम हैं कितने यहां।
निज कर्तव्यों का निर्वाहन भी होता जहां।
देश सेवा कीजिए ईमान रखते हों तभी।
देश सेवा कर रहे कल कारखाने सभी।।

देश सेवा में वो शिक्षक ज्ञान देकर है पढ़ाया।
सिर उठाकर गर्व से हमको जीना है सिखाया ।
प्रशस्त करते है मार्ग जो नव युग निर्माण का ।
सीख देते हैं हमेशा नई खोज और विज्ञान का ।।

देश सेवा से गर्व हो ऐसा कर्म होना चाहिए।
देश सेवा करने का अहसास होना चाहिए।
देश सेवा ही देश भक्ति सद्भाव होना चाहिए ।
देश सेवा है समर्पण तैयार रहना चाहिए।।

– राम प्रकाश गहोई

ऑपरेशन सिंदूर

भारत है वीरों का देश ।
शांति दूत संतों का देश।
लोग सुरक्षित ऐसा देश।
सिंदूर की रक्षा करे ये देश।।

नारी का है सिंदूर कीमती।
सिंदूर को सौभाग्य मानती।
जब सिंदूर आंखों में उतरे।
लाल आंख तेज हो क्रांति।।

पुलवामा में की कायरता।
मानवता की की जो हत्या।
पोंछा है सिंदूर छब्बीस का।
आम नागरिक था निहत्था।।

ये धरा है राम परशुराम की।
ये भूमि है शिव श्याम की।
ये वसुंधरा विक्रमादित्य की।
ये वसुधाहै मौर्यचंद्रगुप्त की।।

समझो तेरी शामत है आई ।
तुझ पर अंधियारी है छाई ।
अब आतंकी नहीं बचेंगे ।
काले बादल वहीं फटेंगे।।

मारूंगा अब तेरे घर घुसकर।
रोएगा सिर पटक पटक कर।
तुम रात दिन डर कर जागोगे।
तब भारत का लोहा मानोगे।।

तेरे नौ आतंकी कैंपों को फोड़ा।
सौ आतंकी को गढ्डों में छोड़ा।
हवाई पट्टी की हवा निकल गई।
चौकियों की तोशक्ल बदल गई।।

सैनिक चौकी छोड़ के भागे ।
तेरी हर गोली पर गोले दागे ।
सारी नदियों का पानी रोका।
मसल के रख दूंगा वो धोखा।।

पाकिस्तान दो दिन में हांफा।
ऑपरेशन सिंदूर से कांपा ।
भारत से अब नहीं भिड़ेगा।
भारत के शौर्य से डरेगा।।

– राम प्रकाश गहोई

ऑँपरेशन सिंदूर

माटी की पुकार

हम तो है माटी धरा की ।
हमको न रंग दीजिये।
अश्रु संचित कर चुके अब।
पुष्प पुलकित कीजिए ॥

सांझ श्रद्धा से भरी थी ।
अब भरी है खौफ से ।
उन अलावों की तपन भी।
डर रही है मौत से ॥

मुसकुराते लाड़लों को।
नेह से भर लीजिये ।
अश्रु संचित कर चुके अब।
पुष्प पुलकित कीजिये ॥

मांग सूनी बहुत कर ली।
इस घिनौने खेल से ।
घाघ भी घबरा गया अब।
सृष्टि की इस भूल से ॥

जिस धरा पर जन्म लेते।
उस पर सितम न कीजिये ।
अश्रु संचित कर चुके अब।
पुष्प पुलकित कीजिये ॥

साहसी यदि हो सपूतो।
छोड़ तो इस दंभ को ।
फिर नया जीवन संवारो।
और संवारो शोध को ॥

क्षोभ का अवसान करके।
घाव फिर भर लीजिये ।
अश्रु संचित कर चुके अब।
पुष्प पुलकित कीजिये ॥

नवधरा की नयी धारा।
राष्ट्र की परिकल्पना ।
सृजित हो शक्ति तुम्हारी।
राष्ट्र भी करता हो गरिमा ॥

उन शहीदों की शहादत।
याद फिर कर लीजिये ।
अश्रु संचित कर चुके अब।
पुष्प पुलकित कीजिये ॥

हम तो है माटी धरा की।
हमको न रंग दीजिये ।
अश्रु संचित कर चुके अब।
पुष्प पुलकित कीजिये ॥

– राम प्रकाश गहोई

श्री महेन्द्र भट्ट

सेवानिवृत्त अध्यापक (शिक्षा विभाग,ग्वालियर)
अधिवक्ता, कवि एवं व्यंग्यकार।

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती लाल बाई जी।**
- पिता का नाम : **पंडित श्री रघुवीर प्रसाद जी।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर, विधि स्नातक एवं स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पत्रकारिता)।**

निवास स्थान

- **ग्वालियर, मध्य प्रदेश।**

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों।**

साहित्यिक अनुभव

- **विगत कई वर्षों से लेखन।**

सत्यापन

मैं सत्यापित करता हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रहा हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

- **काव्य लक्ष्मी**

वतन हिंदुस्तान है

माता भारती के लाल, देश का रखो ख्याल,
तिरंगा झंडा देश का ऊंचा फहराना है।

आपस में करो प्रीत, वतन की हो ऐसी रीत,
आंखों में आँसू नहीं, खुशियों को लुटाना है।

हिंदू , मुस्लिम, सिख, ईसाई, हम सब है भाई,
हर हाल में, यह भेदभाव हमको मिटाना है।

भारत देश में नदियों का पावन संगम रहे,
प्यार की धारा में मिलकर हमको नहाना है।

कश्मीर हमारी जान है, वतन हिंदुस्तान है,
दुनिया के मानचित्र से पाकिस्तान हटाना है।

गांधी, सुभाष, भगत सिंह वीर हुए शहीद यहाँ,
सावरकर, अटल बिहारी का मान बढ़ाना है।

जन-गण-मन और वंदे मातरम गीत को सदा,
एक लय - एक ध्वनि में नित बार-बार गाना है।

– महेन्द्र भट्ट

आज़ादी की मशाल

आजादी की मशाल जलाते रहें ।
नव -निर्माण की गंग बहाते रहें ।।

हम सब भारत मां की एक संतान।
रखना हमको मां के दूध का मान।।

शहादत घड़ी फिर नहीं आएगी।
हम सब को यही सीख दे जाएगी ।।

सच्चे सपूत का फर्ज निभाना है ।
अमर शहीदों का कर्ज चुकाना है।।

एक-जुट होकर यही संकल्प करें ।
आजादी की खातिर देश पर मरें।।

तभी अपना सपना साकार होगा ।
अनमोल जीवन का उद्धार होगा ।।

मां भारती की गोद में जन्म लिया।
अमृत की चाह में सदा गरल पिया ।।

हमें स्वीकार "तमस को पी जाना"।
हमें स्वीकार "जगत हित जी जाना" ।।

अखंडता में होम जवान होगी।
हम वीरों की यही कहानी होगी ।।

– महेन्द्र भट्ट

श्री अमित पाठक शाकद्वीपी

अध्यापक, लेखक, कवि एवं प्रकाशक

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती अनुपमा पाठक**।
- पिता का नाम : **श्री अरविन्द पाठक**।
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातक (गणित प्रतिष्ठा)**।

निवास स्थान

- **गया जी, बिहार**।

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों**।

साहित्यिक अनुभव

- **विगत 3 वर्षों से लेखन**।

सत्यापन

मैं सत्यापित करता हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रहा हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

आतंकी हमला

न भय किसी बात की,
न सही गलत का फरक है।
वाहियात सी सोच है
और बस दहशत की समझ है।।

किसने समझा दिया,
कि बेगुनाहों को मारो।
जन्नत है इसी में,
यही तो जीने का सबब है।।

मूर्ख कुछ लोगो को मिलती है,
नसीहत ये कैसी?
बन बैठते हैं दरिंदे,
हरकतें इनकी वहशी।।

मन में इनके क्यों,
कोई प्रेम का पुष्प नहीं खिलता।
नफ़रत क्यों है इनको इतनी,
आतंकी हमलों से क्या ही भला मिलता।।

– अमित पाठक शाकद्वीपी

कुछ ऐसे थे बोस

भारत भू के दिग्गज योद्धा,
अनुपम जिनकी शान रे,।
रक्त रस से सींच धरा को
दिया बहुत सम्मान रे।।

अद्भुत जिनका जोश
कुछ ऐसे थे बोस।। ....

भारत माँ का सच्चा बेटा,
रग रग में उबाल रे।
हुकूमत जिनसे थर थर कांपे,
ऐसे किए बबाल रे।।

भक्ति थी सर्वोच्च,
कुछ ऐसे थे बोस।। ....

गरम दल के रहे प्रणेता,
देश हित का रहा सवाल रे।
आजाद हिंद था फौज बनाया,
आजादी की बने मिसाल रे।।

अंग्रेज के उड़ गए होश,
कुछ ऐसे थे बोस।।.......

भारत माता की रक्षा में,
किए न्योछावर प्राण रे।
देश धरा पर वीर सुभाष सा,
नहीं कोई महान रे।

सीने में आक्रोश,
कुछ ऐसे थे बोस।।...........

कुछ ऐसे थे बोस।
कुछ ऐसे थे बोस।।

– अमित पाठक शाकद्वीपी

श्रीमती नीरजा वर्मा

गृहिणी, लेखिका एवं कवयित्री

स्वपरिचय

- माता का नाम : **स्व. निर्मला राय**।
- पिता का नाम : **स्व. बी. एन. राय**।
- पति का नाम : **स्व. वीरेन्द्र कुमार वर्मा**।
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर**।

निवास स्थान

- **रायपुर, छत्तीसगढ़**।

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों**।

साहित्यिक अनुभव

- **विगत १६ वर्षों से लेखन**।

सत्यापन

मैं सत्यापित करती हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रही हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

देश भक्ति

देशभक्ति एक भाव है, है कर्म संकल्प,
देश भक्ति के विश्वास का नहीं कोई विकल्प।

वीर शिवाजी, राणा प्रताप और झांसी की रानी,
शौर्य पराक्रम से डटे रहे, योद्धा ये अभिमानी।

तलवारे चमकाई हिम्मत से, रणभेरी थी गूंजी जब,
सामने वीरों के लहुओं से सींच गई, धरती की झोली तब।

देश की रक्षा है धर्म हमारा,
है भविष्य सृजन कर्तव्य हमारा।

कर्म मुख्य है, धर्म वही है,
देशभक्ति के विश्वास का मर्म वही है ।

शक्तियाँ इनकी अनोखी, ठान ली जो कर दिखाएं,
देश प्रेम की लहर जगाती वीरों की गाथाएं।

जी रहे देश हित में,
प्रेम उनका लोकहित में।

आंधियों से बाहर निकले, मेघ से मिटकर बताएं।
देशभक्ति ऐसी देशभक्त बनके दिखाए।

– **नीरजा वर्मा**

देश भक्त

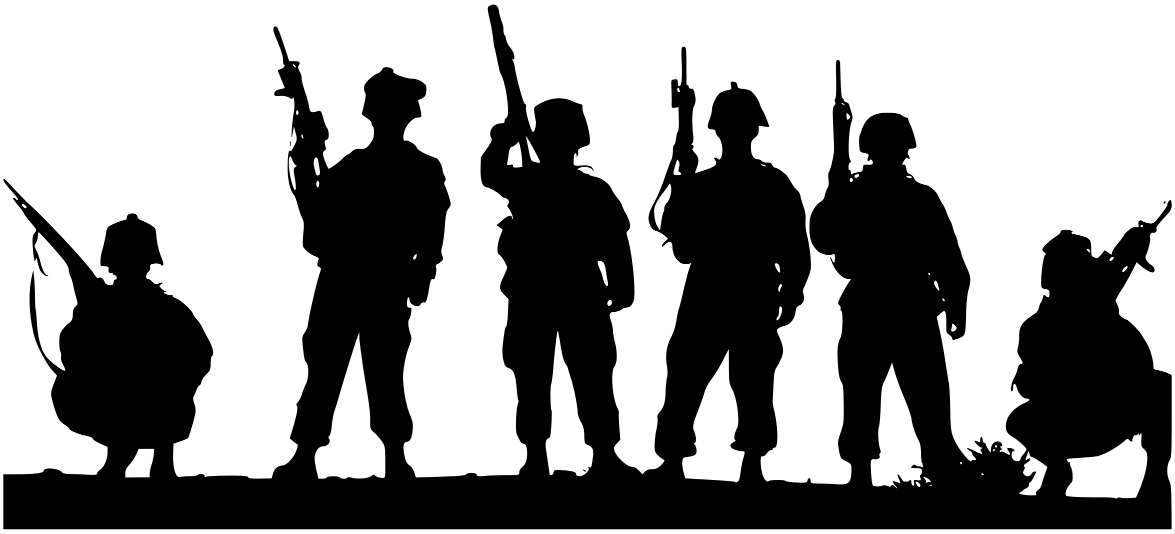

भारत माँ के हम रखवाले, फौजी है बलिदानी,
देश की रक्षा धर्म हमारा, हम हैं सैनिक हिंदुस्तानी।

देश हित में सरहदों पर रक्षा करने अपना खून बहाया,
तभी अपना प्यारा तिरंगा, आसमान में गर्वित हो लहराया।

सरहदों पर आंधी तूफानों से हम हैं टकराते,
जीते मरते देश हित में, अपना धर्म निभाते।

तनमन अर्पित करते मातृभूमि को, कीमत हमने जानी,
तिरंगा सदा रहे ऊंचा हमारा, ये प्रतिज्ञा, हमने मन में ठानी।

लिपट तिरंगे में है आना, है सौभाग्य हमारा,
देश की रक्षा है धर्म हमारा, हम हैं सैनिक हिंदुस्तानी।

– **नीरजा वर्मा**

श्री राज शारदा

सिविल अभियंता (सेवानिवृत्त)

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती सुमत्या देवी।**
- पिता का नाम : **श्री ओम दत्त।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातक (अभियांत्रिकी)।**

निवास स्थान

- **नोएडा, उत्तर प्रदेश।**

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों।**

साहित्यिक अनुभव

- **विगत ४० वर्षों से लेखन।**

सत्यापन

मैं सत्यापित करता हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रहा हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

- **काव्य लक्ष्मी**

तिरंगा

छाया में तिरंगे की, हम उनको नमन करते हैं,
रक्षा में जो भारत की, दुश्मन का दमन करते है।

तूफानी हवाओं में, पर्वत की शिखाओं पे
वो शेर बब्बर अक्सर, दुश्मन के कलेजों पे,
मत आंख इधर करना, ये हरुफ लिखा करते हैं...
छाया में तिरंगे की, हम उनको नमन करते हैं।

दे गर्मी बर्फ जिनको, तपी तोपों से उल्फत है
पत्थर पे लें अंगड़ाई, जहां बीते जवानीं है,
करें फतेह हर इक जंग को, सब खतरे वहन करते हैं...
रक्षा में जो भारत की, दुश्मन का दमन करते हैं।

कार्गिल के बर्फीले, सीनों से मिला सीना
खदेड़ के दुश्मन को, मुख विजय श्री का चूमा,
नमन अमर जवानों को, जां वार अमन करते हैं...
छाया में तिरंगे की, हम उनको नमन करते हैं।

कहीं रेत भरे टिब्बे, भुनें गर्मी में हर दम
दुश्मन पे नजर रखते, चले आंधी जहाँ पल पल
दिन उजाड़ दियाबां में, हंस हंस के बसर करते हैं...
छाया में तिरंगे की, हम उनको नमन करते हैं।

बदमाश तालिबानों, मक्कार मुजाहदीनों
निर्दोषों के हत्यारे, बच्चों के कत्ल कीनों,
ललकारें हिन्द जवां जब, मैदां से भगा करते हैं...
छाया में तिरंगे की, हम उनको नमन करते हैं।

शैतां की दुकानें हैं, हिंसा की खदानें हैं
हथियार बना बेचें, नफ़रत की दुकानें हैं,
करें फ़नाह 'राज 'इनको, जेहाद शमन करते हैं..
रक्षा में जो भारत की, दुश्मन का दमन करते हैं ।
छाया में तिरंगे की, हम उनको नमन करते हैं।।

– राज शारदा

संसद पे हमला

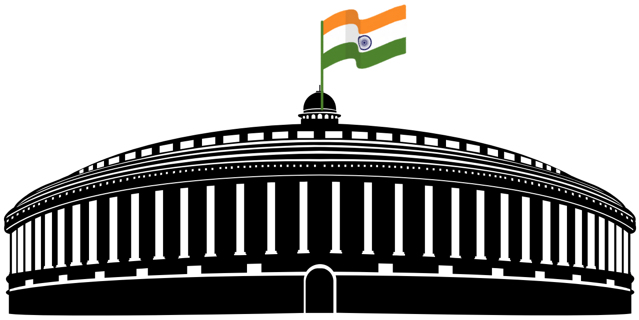

संसद पे किया हमला हम इसकी सज़ा देंगे
काली जिसकी करनीं, करनीं का मज़ा देंगे।

तिथि तेरह दिसम्बर को, गुट जैशे मोहम्मद के
जब पांच आतंकवादी, संसद से जा टकराये,
कुत्तों की तरह बाहर, सड़कों पे मरे पाये.
जैसी जिसकी करनी, वैसा ही सिला देंगे, ...
संसद पे किया हमला, हम इसकी सज़ा देंगे।

खूं जिनके हाथों पे, निर्दोषों निहत्थों का
रंग लायेगा आखिर, बच के नहीं जा सकते,
छुप जायें कहीं पर भी, हम ढूंढ निकालेंगे.
काली जिनकी करनीं, करनी की सज़ा देंगे, ...
संसद पे किया हमला, हम इसकी सज़ा देंगे।

दो मगरी आंखों से, क्यों आंसू बहाते हो,
धोखा नहीं दे सकते, कई हिसाब चुकाने हैं,
अब लश्करे तैयबा से तौबा हम करा लेंगे,
काली जिनकी करनी, करनी की सज़ा देंगे, ...
संसद पे किया हमला, हम इसकी सज़ा देंगे।

परवेज़ जो सच्चे हो, दूध मां का पीया तुमने
जड़ काटो जिहादियों की, करो कैम्प बन्द सारे,
दावूद, मसूद, गाज़ी, भारत के हवाले कर दो,
हम इन आतंकियों को फांसी पे चढ़ा देंगे,
संसद पे किया हमला, हम इसकी सज़ा देंगे.

आओ वरनां मैदां में, हम सबक सिखा देंगे
किसने पहनीं चूड़ी, यह भी बतला देंगे,
बुर्कों में छिपे कितने, डरपोक दिखा देंगे
काली जिनकी करनी, करनी की सज़ा देंगे, ...
संसद पे किया हमला, हम इसकी सज़ा देंगे

– राज शारदा

श्री विजय डांगे

अध्यापक, लेखक, कवि एवं प्रकाशक

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती सुशीला देवी**।
- पिता का नाम : **श्री रघुनाथ राव डांगे**।
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातक**।

निवास स्थान

- **नागपुर, महाराष्ट्र।**

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों**।

साहित्यिक अनुभव

- **विगत कई वर्षों से लेखन**।

सत्यापन

मैं सत्यापित करता हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रहा हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

- **काव्य लक्ष्मी**

देश भक्ति

भारत देश में रहने वाला राष्ट्र प्रेम का है राही।
सैनिक सरहद पर सुरक्षा रात दिन का सिपाही।।ध्रू।।

गलत नजर उठाया कोई, देश हिंदुस्तान पर।
दिया जवाब सरहद के, सैनिक ने आन बान पर।
धूल चटाई पाकिस्तान को कारगिल में सिपाही।।१।।
सैनिक सरहद
सिंदूर समय, बीस मिनट में तमाम अड्डे ध्वस्त किए।
सेवा के दमदार महिला ने राफेल से उड़ा दीये।
जब-जब आतंकी भेजा, काम तमाम किया सिपाही।।२।।
सैनिक सरहद

वचन हमारा, छेड़ो तो नहीं छोड़ेगा, हिंदुस्तान है।
चाहे पाकिस्तान हो, चाहे चीन अनजान है।
खड़ा हिमालय बनकर देश का वीर सिपाही।।३।।
सैनिक सरहद

– विजय डांगे

देश प्रेम

प्यारा हिंदुस्तान है।
सुख शांति का स्थान है।
मिलजुल कर रहते सारे।
हृदय में अभिमान है।।ध्रू।।

जो यहां आता है, छोड़े
ना देश कभी।
देशद्रोही भी यहां मिले,
दंडित होते है सभी।

राष्ट्रीय ध्वज निशान है।
प्यारा तिरंगा शान है।
रंगों की बहार में।
महिमा रंग बखान है।।१।।

भारत भूमि जग न्यारी,
आनंदसुख की है वर्षा।
नजर लगे ना पाक – चीन,
डरते सब सैनिक चर्चा।

महिला का सम्मान है।
उड़ाती राफेल शान है।
पाकि अड्डे ध्वस्त किए।
नारी बहादुर काम है।।२।।

झंडा तिरंगा गाए गीत,
आतंकी भागे मैले।
हरा रंग हरियाली का,
बाग बगीचे है खिले।

केसरिया रंग त्याग है।
सरहद का पैगाम है।
श्वेत शांति का रुप।
सरहद का संग्राम है।।३।।

देश प्रेम बहती सरिता।
आओ मिल देखे सपना।
भक्ति गंगा नरनारी।
भारत सुख शांति गहना।।

बलिदानी कहते गए।
देश पर मिटते गए।
सतपथ ही संग्राम है
विजय देश का नाम है।।४।।

– विजय डांगे

श्रीमती हेमलता साहूकार

शिक्षिका लेखिका कवयित्री एवं सुगृहिणी

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती गोदावरी साहू।**
- पिता का नाम : **श्री प्यारे लाल साहू ।**
- पति का नाम : **श्री साहूकार साहू।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातक, बी. एड. एवं पीजीडीसीए।**

निवास स्थान

- **कुरुद, छत्तीसगढ़।**

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों।**

साहित्यिक अनुभव

- **विगत 3 वर्षों से सक्रिय लेखन।**

सत्यापन

मैं सत्यापित करती हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रही हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

मैं भारत माँ की बेटी हूँ

मैं भारत की बेटी हूँ
कोमल सी काया मेरी।
पर्वत सा विशाल हृदय है,
कमल समान नयन हैं मेरे।।

माँ जैसी ममता है मन में,
बच्चों सी निश्छल मुस्कान मेरी।
फूलों जैसा खिलता मुखड़ा,
कोशिश है हर लूं मैं सबका दुखड़ा।।

कल्पवृक्ष सा बन जाऊं मैं,
सबकी ईच्छा पूरी कर पाऊँ।
सेविका जैसी बन कर,
सबकी सेवा कर पाऊँ।।

सैनिक जैसा बनकर,
माँ की प्यारी बेटी जैसी बनकर।
भारत माँ की रक्षक बन जाऊँ,
अपना यह शौर्य मैं बतलाऊँ।।

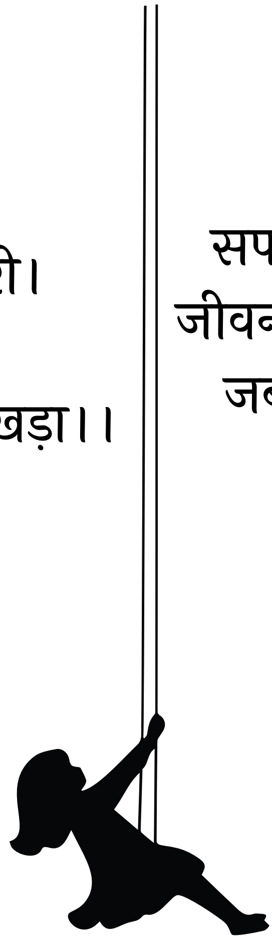

नदियों सी बहती रहूँ
अच्छे कर्म करती रहूँ।
सागर जैसे सबको अपने,
दामन में समाहित कर पाऊँ।।

सूरज सा रोशनी दूँ सबको,
चंद्रमा सी शीतलता दूँ जग को।
अपने अनमोल से शब्दों को,
कथा जैसे अमर कर जाऊँ।

मैं रहूँ न रहूँ कल को,
सफल कर पाऊँ हर एक पल को।
जीवन तो है जैसे पानी का बुलबुला,
जब तक है तन में स्पंदन सा श्वांस
चलते रहे लेखन का ये,
पावन सा सिलसिला।

– हेमलता साहूकार

मेरा देश

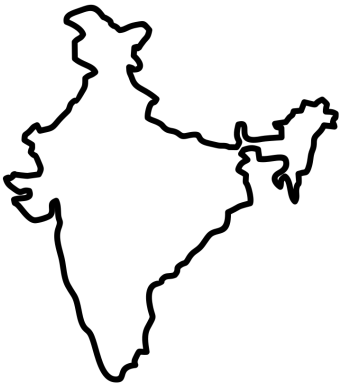

मेरा देश महान
भारत देश महान,
अनेकता में एकता है
जिसकी पहचान।

तीन रंगों का तिरंगा
लहर लहर लहराये,
प्रेम व भाईचारे की खुशबू
चारों दिशाओं में महक जाये,
सदा धरती माँ का बढ़ाये मान
मेरा भारत देश महान।

भारत माँ के रक्षक
वीर सपूतों को शत शत नमन
इनसे ही तो जगमग है ये चमन,
होली, दीवाली, ईद हो
या हो कोई भी त्यौहार,
सैनिक भाई होते हैं
हरपल संघर्ष को तैयार।

सीना तानें खड़े रहते हैं
जो सीमा पर तैनात
उनके जज़्बे को करते हैं सलाम,
बिना रुके जो करते
रहते हैं अनवरत काम।।

बढ़ाते हैं जो भारत माँ की शान,
सारे जहां से अच्छा
हमारा प्यारा हिन्दुस्तान,
मेरा देश महान
मेरा भारत महान।

– हेमलता साहूकार

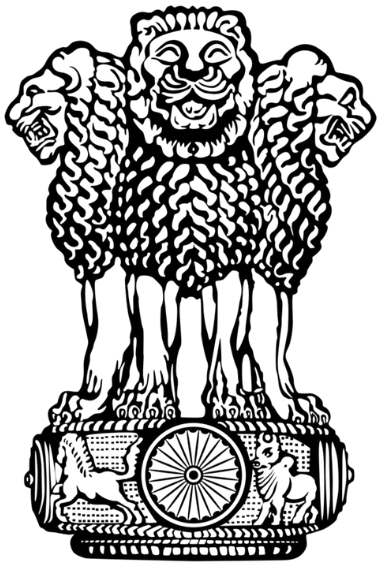

सत्यमेव जयते

श्री अनिल राही

बैंकर (सेवानिवृत्त), कवि एवं लेखक।

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती कमला देवी**।
- पिता का नाम : **श्री बी. एम. लाल श्रीवास्तव**।
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर (विज्ञान)**।

निवास स्थान

- **ग्वालियर, मध्य प्रदेश**।

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों**।

साहित्यिक अनुभव

- **विगत ६ वर्षों से लेखन**।

सत्यापन

मैं सत्यापित करता हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रहा हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

जाग नौजवान

जाग नौजवान, जाग नौजवान, जाग नौजवान,
जाग नौजवान, तूँ थाम ले कमान।
लक्ष्य को भेदकर, तूँ कर दे संधान,
जाग नौजवान, जाग नौजवान, जाग नौजवान।।

१

सर उठाती ताकतें, घूमती हैं देश में,
जाति, धर्म ओढ़कर, छद्मधारी वेश में।
कर रहीं जो खोखला, देश को तोड़कर,
बहिशियाना हरकतें, उग्रवादी जोड़कर।
दूर दृष्टि फेंककर, तूँ थाम ले मचान,
जाग नौजवान, जाग नौजवान,जाग नौजवान।
जाग नौजवान, तूँ थाम ले कमान।।

२

शौर्य में उबाल तेरे, बाहुबल फड़क रहे,
आवाज भी बुलंद है, नेत्र भी कड़क रहे।
खौलती जवानी तेरी, सूर्य सा तेज भारी,
उठा खड्ग हाथ में, जंग की तूँ कर तैयारी।
पाट तूँ धरा को, उग्र मुंड के मशान,
जाग नौजवान, जाग नौजवान, जाग नौजवान।
जाग नौजवान, तूँ थाम ले कमान।।

३

छूटे न गद्दार कोई, सब पे तूँ नजर गड़ा,
काट कर शीश को, धड़ रह जाएगा पड़ा।
शिखा सबक कौम को, तूँ वतन के वास्ते,
फोड़ दे उन आँख को, जो आयें इस रास्ते।
उछाल शीश को तूँ, कर दे रौद्र गान,
जाग नौजवान, जाग नौजवान, जाग नौजवान।
जाग नौजवान, तूँ थाम ले कमान।।

४

बहुत हो चुका अब और ना सहेंगे हम,
करके सफाया तेरा, तभी दम को लेंगें हम।
सौगन्ध माँ भारती की, आन, वान शान की,
हर हिंद की आवाज गूँजे, तिरँगे महान की।
धरा को पाट तूँ, बनाके कब्रिस्तान,
जाग नौजवान, जाग नौजवान, जाग नौजवान।
जाग नौजवान, तूँ थाम ले कमान।।
लक्ष्य को भेदकर, तूँ कर दे संधान
जाग नौजवान, जाग नौजवान, जाग नौजवान।
जय हिंद वन्दे मातरम ।।

– अनिल राही

खूनी सिंदूर

बेशरमी की हदें पार कर जो, अहंकार के मद में चूर।
ओ गीदड़ की औलादें सुन लो,खत्म नहीं खूनी सिंदूर।

१.
पिटे हुए को क्या पीटना, नहीं है रीति हमारी,
सर पर चढ़ कर जो बोले तो, मार पड़ेगी भारी।
सबक सिखाया ऐसा तुझको, भूल गया वो मंजर,
घर में घुसकर छाती में तेरे, खोंप दिए थे ख़ंजर।
ऐसी मार पड़ेगी तुझको,सुन मुल्ला लँगूर,
ओ गीदड़ की औलादें सुन लो,खत्म नहीं खूनी सिंदूर।।

२.
औकात नहीं तेरी मुल्लाओ, जो हमसे टकराये,
भेजे में उतरी जो गोली, फिर भी समझ न आये।
गोला बारूदों ने तुझको, तहस,नहस, कर डाला,
भीख कटोरा हाथ में लेकर, मांगे पेट निवाला।
सभी ठिकाने तेरे हमसे, कहीं नहीं हैं दूर,
ओ गीदड़ की औलादें सुन लो, खत्म नहीं खूनी सिंदूर।।

३.

खुंखारी कुत्तों के जैसे पाल रखे हैं, आतंकवादी,
वही करेंगे चिथड़े तेरे,जन जन की होगी बर्बादी।
तेरी रक्षा के सारे घेरे, ध्वस्त सभी कर डाले,
बचे खुचे उनमें भी तूने, डाल दिये हैं ताले।
सारे सिस्टम तेरे जिनमे, जंग लगी भरपूर,
ओ गीदड़ की औलादें सुन लो, खत्म नहीं खूनी सिंदूर।।

४.

बहुत सब्र किया था हमने, अब न तुझे छोड़ेंगे,
जिन हाथों ने छोड़ी गोली, उनको अब तोड़ेंगे।
कर के बहुत सफाया हमने, उन बहनों की खातिर,
उनमे से जो बचकर भागे, खूनी गद्दारों के शातिर।
हाथ जोड़ घुटनों पर तुझको, कर देंगे मजबूर,
ओ गीदड़ की औलादें सुन लो,खत्म नहीं खूनी सिंदूर।।

– **अनिल राही**

ऑपरेशन सिंदूर

डॉ. अल्पना वर्मा

प्राचार्य एवं निदेशक, एम्पल ड्रीम्स इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन, सीहोर (म. प्र.)।

स्वपरिचय

- माता का नाम : **स्व. सुधा रानी श्रीवास्तव**।
- पिता का नाम : **स्व. सुरेश चंद्र श्रीवास्तव।**
- पति का नाम : **श्री संजय वर्मा।**
- शैक्षणिक योग्यता : **एम एस सी (भौतिक शास्त्र) एम एड, एम बी ए, पी एच डी (तनाव प्रबंधन)।**

निवास स्थान

- **भोपाल, मध्य प्रदेश।**

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों**।

साहित्यिक अनुभव

- **विगत 23 वर्षों से लेखन**।

सत्यापन

मैं सत्यापित करती हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रही हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

कैसा हो ये भारत अपना

कैसा हो ये भारत अपना
मेरा है छोटा सा सपना।

गौतम का यह देश है प्यारा
गीता ने है सबको तारा।
नानक और गांधी-कबीर संग
महावीर ने हमे उबारा।
जात पात का भेद मिटा कर
इन जैसा ही जीवन जीना।
कैसा हो ये भारत अपना
मेरा है छोटा सा सपना।

राम कृष्ण ने प्रेम सिखाया
सबमे ईश्वर अंश बताया।
जब प्रभु कण कण में हैं बसते
क्यों हम मन्दिर मस्जिद करते।
सर्वधर्म सद्भाव बढ़ा कर
जन जन के मन निश्छल करना।
कैसा हो ये भारत अपना
मेरा एक छोटा सा सपना।

जाति धर्म से ऊपर उठकर
सब कहलाये भारत वासी।
विविधायामी संस्कृतियों की
एकसूत्रता हो अविनाशी।
कश्मीरी हों या मद्रासी
गर्वभाव सब पर है रखना।
कैसा हो ये भारत अपना
मेरा है छोटा सा सपना।

विद्यादान मिले हर इक को
जीने का अधिकार मिले हर इक को।
पेट मे रोटी सर पर छत हो
समता का व्यवहार मिले हर इक को।
भेद मिटा छुटके बड़के का
सबके साथ प्यार से रहना।
कैसा हो ये भारत अपना
मेरा है छोटा सा सपना।

प्रेम बढ़े परमार्थ बढ़े
सहयोग के लिए हाथ बढ़े।
न हो कोई दीन दुःखी
सबको इतना सम्मान मिले।
स्वीकारें मतभेद प्रेम से,
मनभेद को ना स्थान मिले।
करुणा हो या दया भाव हो
सबको अपने मन मे रखना।
कैसा हो ये भारत अपना
मेरा है छोटा सा सपना।

गौरव गाथा फिर अतीत की
देश हमारा फिर दोहराए।
सुख समृद्धि की सरिता के संग
सबके पावन पर्व मनाएँ।
बच्चे नारी निर्भय हो
ऐसी हो समाज की रचना।
कैसा हो ये भारत अपना
मेरा है छोटा सा सपना।

– डॉ अल्पना वर्मा

कितने शहीद

सर फ़रोशी की तमन्ना दिल में लिए
जो लाल सो गए चिता पर
उनकी शहादत को सलाम।

जलियांवाला बाग हत्याकांड ने
जिन सैकड़ों हिन्दुस्तानियों को
मौत की नींद सुला दी,
वो मासूम भी तो शहीद ही माने जाएंगे।
इलाहाबाद की हर शाख पर लटके
सिर भी तो शहीद ही कहलाएंगे।

कितने ही ऐसे भगतसिंह
राजगुरु सुखदेव इतिहास
में दफ़्न हैं, जिन्होंने देश को
फिरंगियों से मुक्त कराने
अपनी जान की बाजी लगाई है।

कितनों ने लाठियां खाई
कितनों ने भोगा बरसों कारावास।
कितनों ने अपने परिवारों को खोया,
कौन देगा इसका हिसाब।

हमारी आजादी की कीमत
कितनों ने चुकाई है।
जिस नींव पर खड़े हैं हम
वो नींव शहादत ने बनाई है।

नमन है उन पुष्पों को
जो खिलने से पहले मुरझा गए
और सो गए कांटों की शैय्या पर
हमें फूलों का बिस्तर देने के लिए।

– डॉ अल्पना वर्मा

डॉ. रुपाली गर्ग

शिक्षिका, लेखिका एवं कवयित्री।

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती सुमन बंसल**।
- पिता का नाम : **स्व. ओम बंसल।**
- पति का नाम : **श्री अंकित गर्ग।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर एवं विद्यावाचस्पति।**

निवास स्थान

- **मुंबई, महाराष्ट्र।**

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों**।

साहित्यिक अनुभव

- **विगत 2 वर्षों से सक्रिय लेखन**।

सत्यापन

मैं सत्यापित करती हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रही हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

संदेशे

खत ने मुझको बहुत रुलाया,
पल पल मेरा दिल घबराया
किसी को खत ने बहुत मचलाया,
खत में उसकी माँ का चेहरा आया
गाँव की गलियां माँ की रोटी ने उसे बुलाया,
दिल ही दिल में माँ का ख्याल बार-बार आया
उसने यह सब सोच छुट्टी को पास कराया,
क्योंकि दिल में था घर का साया।

चलते चलते फिर ये ख्याल आया,
तू किसी मोह माया में फंस कर आया
तेरा जमीर तुझको पुकारे,
भारत माँ को दुश्मनों ने दिए अंगार
भारत माँ का मुझ पर कर्ज,
कैसे भूला मैं अपना फर्ज
माँ ने भेजा था देश की रक्षा करने मुझको,
और मैं चल दिया कमजोर करके खुद को
यही सोच मैं लौटा रणभूमि पर,
शूरवीर बनकर ही जाऊंगा अब घर पर
दुश्मनों के आगे कभी ना सिर झुकाऊंगा,
भारत माँ की रक्षा हेतु हमेशा जान लुटाऊंगा।

– डॉ रूपाली गर्ग, नारी स्वर

जय हिन्द

जय हिन्द बोलना क्या होता है?
पूछो उन मतवालों से,
तिरंगे पर आंच ना आ जाए,
डटे रहते चट्टानों पे।

बात बात पर झगड़ना क्या होता है?
पूछो उन वर्दी वालों से,
दुश्मन थर थर कांपे,
कभी ना डरे वो बलिदानों से।

बेचैनी में रहना क्या होता है?
पूछो उन देश के पहरेदार से,
हमें चैन से सुलाकर,
मिलाते आंखें देश के दुश्मन से।

कुर्बानी क्या होती है?
पूछो उन सीमा पर जवानों से,
गद्दारी वो होने देते नहीं, हंसकर जान वो लुटा देते,
भारत मां को बचाने गद्दारों से।

खोना किसी को क्या होता है?
पूछो एक शहीद की मां से,
सोने पर पत्थर रख, खुद को समझाती,
विदा करती अपने लाल को सूनी आंखों से।

– डॉ रूपाली गर्ग, नारी स्वर

डॉ. बलवंत सिंह राणा

व्यवसायी, कवि एवं लेखक।

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती राम प्यारी देवी।**
- पिता का नाम : **श्री देव सिंह राणा।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर (अर्थशास्त्र एवं हिंदी), एमबीए व डॉक्टर इन लिट्रेचर (साहित्य वाचस्पति)।**

निवास स्थान

- **सोलन, हिमाचल प्रदेश।**

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों।**

साहित्यिक अनुभव

- **विगत १८ वर्षों से लेखन।**

सत्यापन

मैं सत्यापित करता हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रहा हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

मेरी भारत माता

एक छोटा सा सपना।
सुखद, शांति, अमन से।
भरा हो भारत अपना।
जीवन में कल कल सरिता।

मीठी तान का सुर भरा।
जम्मू कश्मीर से कन्या कुमारी ।
पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण।
हर तरफ शांति प्रेम भरा हो।

कोई भूखा नहीं सोए आंगन में।
हर हाथ को काम पेट में रोटी हो।
सुबह का भूला शाम को लौटे।
जीवन में कुछ भी न दुःख झेले।

हर घर में सब मुस्कराए,
इन होठों से खुशी की किलकारी हर पल गूंजे।
भूखे को निवाला, नंगे को कपड़ा हो।
कोई बैर भाव नहीं मन में पाले।

ऐसा मेरा भरत का भारत हो।
युगों युगों से से प्रभु कृपा जिस पर अपार।
ऐसा मेरा देश भारत हो।
काश ऐसा मेरा भारत हो।।

– डॉ बलवंत सिंह राणा

ऐसा देश भारत वर्ष है मेरा

चारों दिशाओं में जिसका होता वंदन,
जहाँ खुशियां भी करती हंसकर क्रंदन।
युग युगांतर बहती कल कल सरिता,
ऐसा देश भारत वर्ष है मेरा ।।

सब देशों का जनक इसे ही कहते,
आर्यों का इतिहास यही युगों से रचा।
पल पल पहाड़ों की ठंडी ठंडी हवा बहती,
सर सर झरने, नदियां कूल कल कल कर बहते।।

हर दम आदर सम्मान है,
संस्कृति ही पहचान है।
आज भी सर्वोच्च यहां पर,
मात पिता की पूजा होती घर घर।।

समय ने करवट कुछ बदल ली,
मानव छू रहा ऊंचाई।
हर पल ऐसा देश मेरा
जहां ईश्वर स्वयं है रक्षक।।

बचपन से संस्कारों की होती जीत यहाँ
हिम से मैदान तक गीत गुनगुनाते
सब हर पल ऋषियों की भूमि,
अनंत धर्मों का संगम यहाँ
रहते मिलकर खुशी खुशी
ऐसा देश है मेरा ।।

कभी आशा, कभी निराशा का,
दीपक जलता है
इस मानव जीवन का
इतिहास यही पुनः जन्म लेता है।।

जहां सात सुरो का संगम
हर कंठ है गाता
पशु पक्षी भी करते खुशी खुशी कलरव
ऐसा देश है मेरा।।

जहां मेले लगते हर दम
शब्द नहीं, अभिव्यक्ति के खातिर
जिह्वा पर जिसका गुणगान निरंतर
दुनिया करती पल पल
ऐसा देश है मेरा,
मृत्यु भी गाए गीत खुशी का हर पल।।

– डॉ बलवंत सिंह राणा

श्रीमती हेमा कारीकांत

शिक्षिका, कुशल गृहिणी, लेखिका और कवयित्री

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती रामकली जी।**
- पिता का नाम : **स्व. मानिक चंद जी ।**
- पति का नाम : **श्री मनोज कारीकांत।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर (हिंदी साहित्य)।**

निवास स्थान

- **जबलपुर, मध्य प्रदेश।**

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों।**

साहित्यिक अनुभव

- **विगत कुछ वर्षों से लेखन।**

सत्यापन

मैं सत्यापित करती हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रही हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

क्या आजाद हो पाएं है ?

हम आजाद होकर भी,
क्या आजाद हो पाएं है ?

विकरल विचलित देश आज है,
छुआछूत और जात -पात से,
रंगभेद से आज भी,
कुंठित हो जाता है भेदभाव से।

भ्रष्टाचार का गहरा घातक,
वार करके करता आहत,
इस घाव पर करता कुंठन ,
घूसखोरी का होता जब आबंटन।

इस कुंठा से देश को,
मुक्त करा नहीं पाएं है ,
हम आजाद होकर भी,
क्या आजाद हो पाएं है ?

कन्याओं का होता पूजन,
कन्याओ से सृष्टि सृजन।
फिर क्यों होता उनका शोषण,
क्यों खलता हैं उनका पोषण।

शिक्षा से स्त्री का,
क्यों हो जाता है विद्रोहन,
उनकी इच्छाओं का पल पल
होता ही आया है दोहन।

स्त्री जिसकी है हकदार,
हक वो दे नहीं पाएं है।
हम आजाद होकर भी,
क्या आजाद हो पाएं है?

आतंकवाद से जूझ रहा है,
देश आज भी शैतानो से ,
भीरू करते पीछे हमला,
डरते है वो मैदानो से।
मर्द नहीं वो कायर है जो,
गिरते अपने ईमानो से।

वो आतंकी शेर की खाल पहन,
भेडिये घर पर आएं है।
हम आजाद होकर भी,
क्या आजाद हो पाएं है?

राजनीति का ऐसा दलदल,
देश में कर देता हलचल।
मुद्दा चाहे जैसा भी हो,
हो जाता है इस पर अनशन,
महँगाई और बेकारी से,
रोज ही मरता है जब निर्धन।

मौन रहते इस पर नेता
कुछ भी कर नहीं पाएं है।
इस विकट समस्या को,
क्या हम दूर कर पाएं है ?
क्या सचमुच इस आजादी का हम,
सम्मान कर पाए हैं?
हम आजाद होकर भी,
क्या आजाद हो पाएं है ?

– हेमा कारीकांत

आज़ादी

असंख्य बलिदानों के बाद हमने आजादी पाई है,
लहुलुहान हो कर कुर्बानी देकर वीरगति पाई है।

वो आजादी के परवाने उनको कुछ न गम,
झूल गए फांसी पर निकले हंसते हंसते दम।

रास न आई अंग्रेजो को वीरों की अगुवाई है,
लहुलुहान हो कर कुर्बानी देकर वीरगति पाई है।

क्रांतिवीर साहस के आगे दुश्मन सारे भाग गए,
भारत सपूतो के आगे ब्रिटिस सारे हार गए।

आजाद, भगत, सुखदेव नित नए करतब दिखाते,
दूर फिरंगी देख उन्हें दांतों तले अंगुली दबाते।

भारत को आजाद कराने की हमने कसमें खाई है,
लहू लुहान होकर कुर्बानी देकर वीरगति पाई है।

बटुकेश्वर और भगत ने हिला दिया बम फेंककर,
चौंक गए सब असेम्बली में उनका साहस देखकर।

इंकलाब, इंकलाब का नारा फिर से लगा दिया,
करतल अपने आगे कर स्वयं ही खुद को सौंप दिया।

शहीदों की कुर्बानी से मौत भी शरमाई है,
लहू लुहान होकर कुर्बानी देकर वीरगति पाई है।

भगत, सुखदेव, राजगुरु अंग्रेजो जो दुश्मन,
था फरमान लटका दो फांसी पर इनको फोरन।

लटक गए वो दीवाने जय जय भारत की बोलकर,
न्यायमूर्ति की आंखें झुक गई अन्याय को तोलकर।

इस कुर्बानी से ही देश में स्वतंत्रता आई है,
लहू लुहान होकर कुर्बानी देकर वीरगति पाई है।

– हेमा कारीकांत

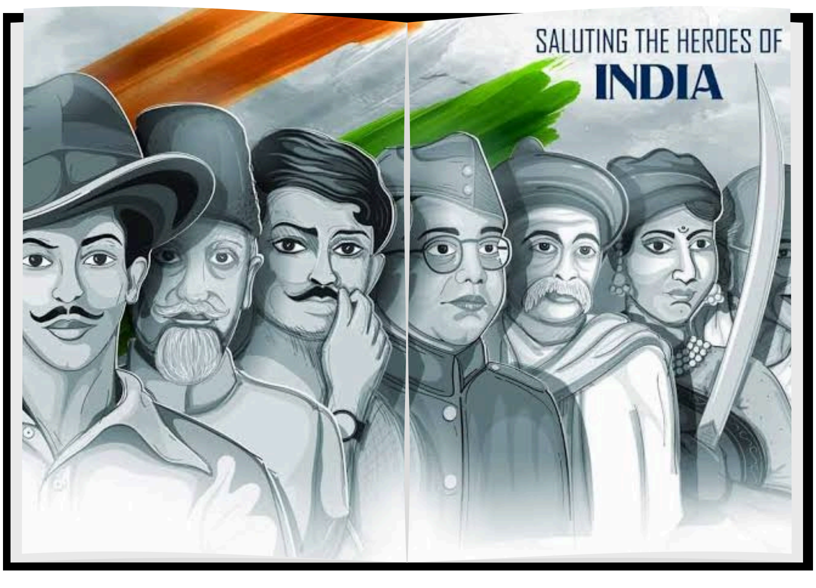

श्रीमती मनीषी सिन्हा

कुशल गृहिणी, लेखिका, कवयित्री एवं समाज सेविका।

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती शिव कुमारी जी।**
- पिता का नाम : **श्री राजनंदन प्रसाद सिन्हा।**
- पति का नाम : **श्री संजीव कुमार।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर एवं एम. एड.।**

निवास स्थान

- **गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश।**

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों।**

साहित्यिक अनुभव

- **विगत 8 वर्षों से सक्रिय लेखन।**

सत्यापन

मैं सत्यापित करती हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रही हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

वंदन मातृभूमि तेरा

हे भारत भूमि तेरा जय गान अमर रहे
प्रज्ञा दीप्त गरिमामय अमृत रसधार बहे !

अध्यात्म विज्ञान का अद्भुत संगम
आचार व्यवहार की दृष्टि विहंगम
योग भोग के संतुलन सरगम से
निष्काम कर्म, जीवन संगीत रहे !

स्वर्णिम इतिहास का गौरव गुंजन
वीर तपस्वियों की धरती निरंजन
चंदन सुरभित इसकी माटी में
संस्कारों का निज चेतन स्वर रहे !

भारती पुत्रों का संकल्प तिरंगा
शहीदों के लहू से रक्तिम गंगा
असंख्य बलिदानों की गाथा से
स्वतंत्रता का सौगात अमर रहे !

रज रज स्वदेश का कर्जदार
मान प्रतिष्ठा का जिम्मेदार
एकता समता के सिद्धांत से
कर्तव्य पथ पर नव हुंकार भरें !

राष्ट्रीय वैभव का पुनर्जागरण
करें आदर्श सद्गुणों का वरण
उद्यम साहस पुरुषार्थ के प्रण से
आत्मनिर्भरता का हम शंखनाद करें !

हे भारत भूमि तेरा जय गान अमर रहे
प्रज्ञा दीप्त गरिमामय अमृत रसधार बहे !

— मनीषी सिन्हा

नव भारत

जन गण मन के समवेत स्वरों से
गूंजे समृद्ध वृहत गणतंत्र हमारा
उर्जस्वित हो वासंतिक आभा से
अमर यशस्वी नव भारत हमारा !

उन्मुक्त लहराते तिरंगे में शोभित
स्वतंत्र भारत का अरमान हमारा
हम भारत के लोग में अंतर्निहित
लोकतांत्रिक गर्व विश्वास हमारा !

सर्वधर्म समभाव बंधुता समता में
न्याय प्रतिष्ठा ऐक्य संकल्प हमारा
जन अधिकारों की सजग भाषा में
निहित नैतिक कर्त्तव्यबोध हमारा !

होम हुए जो स्वतंत्रता के समर में
उन वीरों को नमन बारंबार हमारा
शहीदों की लहू से सिंचित धरा में
पनपे बस शांति प्रेम सद्भाव हमारा !

– मनीषी सिन्हा

श्रीमती वसुधा श्रीवास्तव

शिक्षिका(सेवानिवृत, जवाहरलाल नेहरू विद्यालय, हबीबगंज,भेल, भोपाल, मध्य प्रदेश) विभागाध्यक्षा, लेखिका एवं कवयित्री।

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव**।
- पिता का नाम : **श्री मदन किशोर श्रीवास्तव।**
- पति का नाम : **श्री टी. डी. श्रीवास्तव।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर (हिंदी व संस्कृत) एवं बी. एड.।**

निवास स्थान

- **भोपाल, मध्य प्रदेश।**

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों**।

साहित्यिक अनुभव

- **विगत कई वर्षों से सक्रिय लेखन**।

सत्यापन

मैं सत्यापित करती हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रही हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

ऑपरेशन सिंदूर

आओ मिलकर करें प्रतिज्ञा आतंकवाद मिटाएंगे,
देश के दुश्मन गद्दारों को धूल चटा दिखलाएंगे,
करते आए देश पर हमला अब नहीं वे बच पाएंगे.
पहलगाम हो या पुलवामा दंड अवश्य ही पाएंगे।

आपस में करते हैं झगड़ा समझ उन्हें नहीं आता है,
आतंकवाद से तो उनका जन्म जन्म का नाता है,
सिन्धु जल का निर्णय सुनकर दुश्मन अब घबराता है,
गीदड़ भभकी दे देकर कर झूठी हिम्मत दिखलाता है,

सीजफायर का किया उल्लंघन अब वे बच नहीं पाएंगे,
ऑपरेशन सिंदूर ने बता दिया एक दिन सब दफन हो जाएंगे,
जाति धर्म की बात करी थी अब हनुमान चालीसा पढ़ाएंगे,
पहलगाम में कलमा पूछा था अब श्लोक तुम्हें सिखलाएंगे।

भारतवासी दिखाते हैं विनम्रता तुम ही आग लगाते हो,
तीनों सेनाओं के हमलों से अब तुम क्यों घबराते हो,
विश्वपटल पर हो रहा अपमान शर्म तुम्हें नहीं आती है,
भारतवासी जासूसों को शरण वहां दी जाती है,

जिन्होंने दिया था साथ तुम्हारा अब वे भी पछताएंगे,
भारतवासी कर रहे विरोध सभी रास्ते बंद हो जाएंगे,
हिंसा का पाठ पढ़ाया हरदम अहिंसा हम कैसे दिखलाएंगे,
देश के दुश्मन गद्दारों को धूल चटा दिखलाएंगे।

– वसुधा श्रीवास्तव

स्वतंत्रता दिवस

स्वतंत्रता दिवस का यही पैगाम, बढ़ाएंगे हम सब देश की शान,
प्रतिवर्ष ध्वज फहराना है, यही होगा मन में लक्ष्य महान।
करेंगे मिलकर पूरा प्रयास, हर बच्चा कर्तव्य पथ पर बढ़ता जाए,
विश्व में कुछ अद्भुत दिखला कर, अनमोल पहचान अपनी बनाए।।

परतंत्रताओं की श्रंखलाओं को तोड़, सन् ४७ में १५ अगस्त मनाया था,
स्वतंत्रता दिवस बना ऐतिहासिक, जिस दिन राष्ट्रीय ध्वज फहराया था।
आने वाली पीढ़ी का सदा ही हो लक्ष्य महान,
देश की सेवा के खातिर, होना पड़े चाहे कुर्बान।।

भारत माता के आंचल की हर पल रक्षा करते जाना है,
वीर जवानों की स्मृति में स्वयं देश का रक्षक बनकर दिखलाना है।
वीर शहीदों की कुर्बानी भूल न जाना मेरे प्यारों,
प्यारे देश की रक्षा खातिर मातृभूमि को हर पल संवारो।।

विश्व विजयी तिरंगे का हर पल करना होगा सम्मान,
वसुधैव कुटुंबकम् का संदेश हमारा. हृदय में हो सबका कल्याण।
भ्रष्टाचार का जड़ मिट जाए, ऐसा प्रयास करते जाना है,
हर परिवार शिक्षित हो जाए, सबकी बेटियों को शिक्षा दिलवाना है।।

स्वतंत्र भारत की स्वतंत्रता का हर पल मान बढ़ाना है,
देश सेवा के खातिर भावी पीढ़ी के हृदय में देश प्रेम जगाना है।
हर बच्चे को बचपन से ही देश रक्षा का पाठ पढ़ाना है,
स्वतंत्रता दिवस का यही पैगाम राष्ट्रीय ध्वज फहराना है।।

अवकाश मानकर घर में बैठ न जाएं,
प्रतिवर्ष ध्वजारोहण करने जाना है।
मन में हो यह संकल्प हमारा, राष्ट्रीय पर्व हमेशा पूरे जोश से मानना है,
तिरंगे का करके सम्मान जन गण मन फिर गाना है।

– वसुधा श्रीवास्तव

सूबेदार राम स्वरुप कुशवाह

भारतीय थल सेना से सेवानिवृत्त, अध्यक्ष (वरिष्ठ नागरिक काव्य मंच) एवं उपाध्यक्ष (सोशल मोटिवेशनल ट्रस्ट, कर्नाटक)।

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती काशीबाई जी।**
- पिता का नाम : **स्व. भैरों सिंह जी।**
- शैक्षणिक योग्यता : **मैट्रिकुलेशन एवं सैनिक कोर्स।**

निवास स्थान

- **बैंगलोर, कर्नाटक।**

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों।**

साहित्यिक अनुभव

- **विगत कई वर्षों से लेखन।**

सत्यापन

मैं सत्यापित करता हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रहा हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

- **काव्य लक्ष्मी**

भारत

इस धरती पर बहुत देश है,
पर भारत जैसा कोई नहीं।
खाना पीना रहना सहना,
भारत जैसा कहीं नहीं।।

हर धर्म के लोग यहां है,
अलग अलग परिवेश है।
बोलीं भाषा अपनी-अपनी,
पर मिलकर सारे एक है।।

पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण,
अलग-अलग त्यौहार है।
कहीं छट कहीं दुर्गा पूजा
कहीं विहु, लोहड़ी त्यौहार है।।

हर एक की अपनी अपनी,
अलग-अलग पहचान है।
भेष भूसा अलग अलग,
जिस्म तो अलग-अलग
पर हम सब एक जान हैं।।

गंगा, यमुना, सरस्वती,
सतलुज, कृष्णा, कावेरी।
काशी मथुरा, द्वारका,
करों चारों धाम की फेरी।।

एक गुलदस्ता जैसा भारत ,
ख़ून रंगों में भारतीय।
भारत माता दिलों में रहतीं,
स्वरुप उतारें आरती।।

– सूबेदार राम स्वरुप कुशवाह

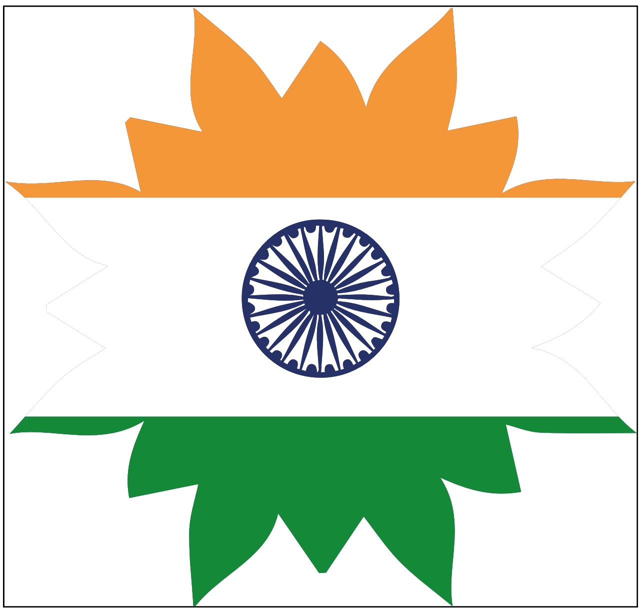

फ़र्ज

जब तक दम में दम है हमारे,
अपना फर्ज निभायेंगे।।
वचन दिया जो भारत माँ को,
माँ का कर्ज चुकायेंगे ।।

इस मिट्टी में जन्म लिया है,
इसमें ही हम खेले हैं।।
सारी खुशियाँ इसी से पाई,
इसी से सारे मेलें है।।

आंच न आने देंगे इसको,
देकर जान बचायेंगे।।
वचन दिया जो भारत माँ को,
माँ का कर्ज चुकायेंगे ।।
जब तक दम में दम है हमारे.....

सैनिक का तो फर्ज है होता,
देश की रक्षा करने का।
देशवासी खुशहाल रहें,
दु:खो को उनके हरने का।।

दुश्मन चाहें ताकतवर हो,
पीठ कभी न दिखायेंगे।।
वचन दिया जो भारत माँ को,
माँ का कर्ज चुकायेंगे।।
जब तक दम में दम है हमारे.....

सरहदों को तो सम्हाला हमने,
अन्दर आप सम्हालो जी।।
देश का बच्चा बच्चा सैनिक,
अपना अंश भी डालों जी।।

स्वरुप अपना फर्ज अदा कर,
गीत खुशी के गायेंगे।।
वचन दिया जो भारत माँ को,
माँ का कर्ज चुकायेंगे।।
जब तक दम में दम है हमारे.....

– सूबेदार राम स्वरुप कुशवाह

रचनाकार परिचय

श्रीमती संध्या मिश्रा 'मयूरी'

कंप्यूटर ऑपरेटर, कवयित्री एवं पूर्व अध्यापिका

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती मंजू देवी।**
- पिता का नाम : **श्री पीतांबर वर्मा।**
- पति का नाम : **श्री मयूर मिश्रा।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातक एवं कंप्यूटर डिप्लोमा।**

निवास स्थान

- **इन्दौर, मध्य प्रदेश।**

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों।**

साहित्यिक अनुभव

- **विगत ०७ वर्षों से सक्रिय लेखन।**

सत्यापन

मैं सत्यापित करती हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रही हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

- **काव्य लक्ष्मी**

एक पत्नी की आवाज

ओ सरहद के वीर सिपाही।
राह तके तेरी प्राणन प्यारी।।

सात फेरे लिए हैं संग में, और लिए सात वचन भी हैं।
कहा था तुम हो प्राण- प्रिये,पर प्राणों से प्यारा वतन भी है।।

देश के हित में जीना, करम यही मेरा धरम यही।
देश की सुरक्षा की खातिर, जीवन यही मरण यही।।

पर मुझ पर भी दो ध्यान जरा।
सुन लो मेरी भी अरदास जरा।।

सावन के झूले करें पुकार।
तुम बिन कैसे करुँ श्रृंगार।।

उम्र तुम्हारी लम्बी हो, करती हूँ मैं तीज।
पर लगातार बहतें हैं आँसू, नैना जाये भीग।।

रिश्तों से पहले देश है, तुम पर मुझको अभिमान है।
वीर पुरुष हो मेरे तुम, तुम पर मुझको अभिमान है।।

– संध्या मिश्रा 'मयूरी'

ऑपरेशन सिंदूर

बाइस अप्रैल दो हजार पच्चीस,
पहलगाम की घाटी बायसरन।
कुछ नव-विवाहितों का जोड़ा,
मना रहा था हनीमून।।

करते हुए हंसी-ठिठोली,
खूबसूरत वादियों में खोये थे।
वादी की ठंडी पवन संग,
मीठे सपनों में खोये थे।।

मौके की तलाश में,
बैठे कुछ आतंकी थे।
धर्म पूछ कर वार किया,
पापी बहुत वो सनकी थे।।

छब्बीस निर्दोषों की
नृशंस हत्या की साजिश थी।
कुछ नई नवेली जोड़ियाँ भी
निर्दोषों में शामिल थी।।

पत्नी के ही सामने,
पति को गोली मारी थी।
ना बचा सकी सुहाग वो अपना,
विधवा हुई बेचारी थी।।

हाथों की मेंहदी भी ना छूटी।
जाने क्यों उससे किस्मत रूठी।।

पर बाइस अप्रैल का बदला,
बाइस मिनट में गया लिया।
आतंकवादियों को मारने का,
मोदी ने मन में ठान लिया।।

मोदी ने संकल्प उठाया,
ऑपरेशन सिंदूर चलाया।
छह और सात मई की रात,
दुश्मन के बिगड़े हालात।।

जल-थल-वायु-ड्रोन-मिसाइल से,
एक साथ जब वार किये।
सभी ठिकाने ध्वस्त किये,
बासठ आतंकी मार दिए।।

– संध्या मिश्रा 'मयूरी'

रचनाकार परिचय

श्रीमती सरिता गुप्ता

अध्यापिका, कवयित्री एवं लेखिका

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती आशा देवी**।
- पिता का नाम : **स्व. केदार प्रसाद रविदास।**
- पति का नाम : **श्री भूषण कुमार गुप्ता।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातक (वाणिज्य)।**

निवास स्थान

- **कामरूप, असम।**

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों**।

साहित्यिक अनुभव

- **विगत ०६ वर्षों से सक्रिय लेखन**।

सत्यापन

मैं सत्यापित करती हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रही हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

थी भारत माता जब सोने की चिड़िया

क्या गाँव, शहर सब एक सा था,
ना कोई हिन्दू , मुस्लिम,
मिलनसार भाईचारे जैसा था।

सुख दुख सारे मिलकर बाँटे।
हिन्दुस्तान अपना ऐसा था।

धन धान्य से परिपूर्ण था भारत,
मिलनसार सभी, सब सहयोगी थे।

दिल में अमीरी रखते थे सारे,
हर धर्म से पहले हम हिंदुस्तानी हैं,
थे उनके एक ही नारे।

चाहे इक घर शादी पड़ जाए,
तो पुरा गाँव उसमें हाथ बटाए।

हर तीज त्यौहार पर घर घर खुशियाँ बँटता,
थी भारत माता जब सोने की चिड़िया।

– सरिता गुप्ता

क्या सचमुच आज़ाद हैं हम ?

लहू गरम होता था तब भी,
आग बदन में लगती है अब भी।

लाज बहुत बेटियों की लुटती थी तब भी,
इज्ज़त बहुत बेटियों की लूटती है अब भी।

महफूज़ ना थें हम तब भी घरों में,
सहमें से रहते है हम अब भी घरों में।

सच्चे देशभक्तों का नरसंहार होता था तब भी,
हिंदू मुस्लिम को लड़वाकर,
देश के टुकड़े करवाएँ,
खून से पानी का रंग लाल हुआ था,
ना जाने कितनी लाशों का अंबार लगा था।

क्या सच में आजादी है पाई हमने?
चले,पूछे ज़रा, अपने अंतर मन से।
जाति के नाम पर लाशें, बिछती है अभी,
सपनों के घर जलते हैं अब भी।

आज के मानव हैवान हुए हैं,
जो अपनी ही खुशियों की खातिर,
अपने ही रिश्तो को तार तार है करते।

कल तक अंग्रेजों के अधीन थे हम,
आज, अपने ही लोगों के गुलाम हुए हैं।
कल तक घुट-घुट कर जीते थे हम,
आज खुली हवा में ज़हर घुला है।

मन में लालच लिए,
देश को ठगते हैं अब भी।

आखरी शब्दों में, बस, कहना चाहूँगी मैं,
नहीं चाहिए हमें हर घर तिरंगा,
चाहिए हमें बस हर नगर, हर देश
और अपने भारत देश की सुरक्षा।

– सरिता गुप्ता

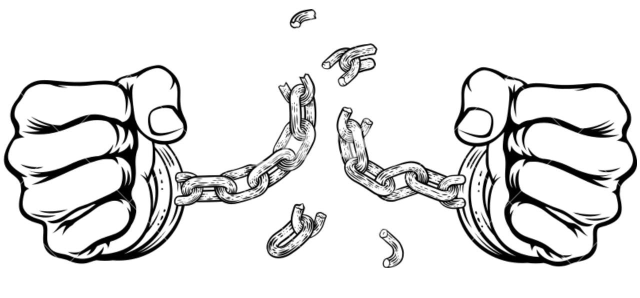

श्रीमती अवंतिका विशाल "अवि"

अध्यापिका, कवयित्री एवं लेखिका

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती शकुन मिश्रा।**
- पिता का नाम : **श्री राजकुमार मिश्रा।**
- पति का नाम : **श्री विशाल मलिक जी।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर एवं बी. एड.।**

निवास स्थान

- **लुधियाना, पंजाब।**

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों।**

साहित्यिक अनुभव

- **विगत कुछ वर्षों से सक्रिय लेखन।**

सत्यापन

मैं सत्यापित करती हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रही हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

तुमसे देश हमारा है...

वीरो भारत भारत भारत, देश तुमसे हमारा है
सरहद पर जो आँख उठाए, नहीं तुमको गवारा है
लेकर जान हथेली पर तुम, खड़े रहे सीमाओं पर
रक्त रंजित हुई काया पर, हिन्दुस्तान संवारा है ॥
भारत भारत भारत, तुमसे देश हमारा है...

नमन सपूतों तुमको मेरा, अपना फ़र्ज निभाया है
बलिदान देकर मातृभूमि का, हर इक़ कर्ज़ चुकाया है
कर ली छाती छलनी छलनी, लहू से खेल गए होली
हिम्मत शौर्य पराक्रम से, गौरव दर्ज़ कराया है ॥
भारत भारत भारत, तुमसे देश हमारा है...

रंग गया धरती का आँचल, माटी तिलक लगाया है,
हौसलों की उड़ान भरी जब, दुश्मन ने सताया है।
देश की रक्षा थी काँधों पर, हुँकार दिखाई शत्रु को,
कर दिया सर्वस्व न्यौछावर, आगे क़दम बढ़ाया है ॥
भारत भारत भारत, तुमसे देश हमारा है...

भारत के जांबाज सैनिको,अदम्य साहस दिखलाया है,
धन्य हुई ये धरती वीरो, नया इतिहास रचाया है।
फौलादी ज़ज्बों को लेकर, दस पर एक पड़ा भारी,
चैन सुकूँ हम सोए घरों में, देश तुमने संभाला है ॥
भारत भारत भारत, तुमसे देश हमारा है...

नमन वंदन अभिनन्दन , बार बार तुम्हारा है
नमन अभिनन्दन, रण बाँकुरों तुम्हारा है ॥

– अवंतिका विशाल "अवि"

भारत माँ का लाल

भारत माँ का लाल
जो शहीद हो गया
माँ भारती की प्रीत में
वो वीर खो गया ॥

समूचे विश्व में भारत का
वो नाम रोशन कर
धरा की गोद में सर रख
सुकूँ की नींद सो गया ॥

रणबाँकुरों के दम पर
हम आज जिंदा हैं
सुरक्षित हम घर पर
देश की लाज ज़िंदा है ॥

जब तिरंगे में लिपट कर
जवान घर आया
टूटा था दिल मगर
अमर जाबाज ज़िंदा है ॥

निपुणता थी रणकौशल में
सीने पर खाई गोली
हँसते-हँसते प्राण गंवाए
माँ रोते - रोते बोली ॥

जा मेरे प्यारे लाड़ले
तूने फर्ज निभाया है
धरती ही तेरी माँ थी
तूने तो कर्ज़ चुकाया है ॥

– अवंतिका विशाल "अवि"

श्री जगदीश प्रसाद गबेल

सहायक अध्यापक, कवि एवं लेखक।

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती तमसा देवी गबेल।**
- पिता का नाम : **श्री श्याम लाल गबेल।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर (वनस्पति शास्त्र, समाज शास्त्र, हिंदी, संस्कृत एवं मनोविज्ञान)**

निवास स्थान

- **डोडकी सक्ती, छत्तीसगढ़**

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों।**

साहित्यिक अनुभव

- **विगत कई वर्षों से लेखन।**

सत्यापन

मैं सत्यापित करता हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रहा हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

शुभ राष्ट्रीय पर्व

लो आ गया फिर से, शुभ राष्ट्रीय पर्व है,
भारत की प्रजा त्रस्त, नेता मगन मस्त है।

नेता को चिंता है, रस्म अदा करने की,
तिरंगे से ज्यादा, खुद को संभालने की।

प्रजा की पीड़ा से, उसे क्या होता है,
सभा मे जाकर सिर्फ, भाषण ही तो देना है।

शुभ दिन संघर्ष वचन, प्रजा को भरना है,
हक लेकर जीना, हक लेकर मरना है।

नेता को प्रजा ही, दे सकती है शिकस्त है,
नेता होगा दुरुस्त, अगर प्रजा चुस्त है।

लो आ गया फिर से, शुभ पंद्रह अगस्त,
शादी का जश्न मनाए, पूरा भारत देश।

लो आ गया फिर से, शुभ गणतंत्र दिवस है,
संविधान का जश्न मनाएं, पूरा भारत देश।

भाषा धर्म जाति का, नहीं कलुप है मन में,
शान से फहरा रहे, सब तिरंगा गगन में।

डोडकी सक्की छग में, फहरायेगे तिरंगा शान से,
हर गांव शहर में, फहरायेंगे तिरंगा शान से।

— जगदीश प्रसाद गबेल

शीर्षक

आओ करें, भारत देश की गुणगान,
आओ करें, राष्ट्र का गुणगान।

राष्ट्र हमारी सांस, राष्ट्र हमारी जान,
राष्ट्र हमारी जाति धर्म, राष्ट्र हमारी मान।

राष्ट्र के खातिर, जान हो न्यौछावर,
राष्ट्र के खातिर, कुछ भी करना।

राष्ट्र के खातिर, दिलों जान से जीना,
राष्ट्र के खातिर, दिलों जान से मरना।

राष्ट्र हमारे गौरव, राष्ट्र हमारी शान,
राष्ट्र हमारी गरिमा, राष्ट्र हमारी जान।

डोडकी है हमारी जन्मभूमि, करें सभी सम्मान,
छत्तीसगढ़ है धान का कटोरा करें सभी सम्मान।

आओ सभी डोडकी सक्ती छत्तीसगढ़ निवासी,
सभी एक साथ मिलकर करें राष्ट्र का सम्मान।

आओ सभी डोडकी सक्ती छत्तीसगढ़ निवासी,
सभी एक साथ मिलकर करें भारत का सम्मान।

— जगदीश प्रसाद गबेल

डॉ. शरद शर्मा

स्नातकोत्तर चिकित्सा अधिकारी (चिकित्सक/सर्जन), कवि एवं लेखक।

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती माया देवी शर्मा**।
- पिता का नाम : **श्री प्रभाकर शर्मा**।
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर (एमबीबीएस, एमएस), FIAGES एवं FISCP**।

निवास स्थान

- **मुरैना, मध्य प्रदेश**।

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों**।

साहित्यिक अनुभव

- **विगत २२ वर्षों से सक्रिय लेखन**।

सत्यापन

मैं सत्यापित करता हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रहा हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

मातृभूमि से प्रेम

मातृभूमि की गोद में,
प्रेम की धारा बहती है।
मोल चुकाओ राष्ट्रभक्ति से,
ये वतन की मिट्टी कहती है।

हर धड़कन में भारत माँ बसी हुई,
भारत माँ हर दिल में समाई है।
मातृभूमि की करना रक्षा
शैशव से ये शपथ हमें दिलाई है।

हर पल, हर त्योहार में यहाँ
प्रेम की बारिश होती है।
मातृभूमि के लिए त्याग सदा
यहां रग रग से गुजारिश होती है।

वतन की मिट्टी की खुशबू,
दिल को महका देती है।
मातृभूमि से प्रेम, समर्पण
मेरे मन को चहका देती है।

– डॉ. शरद शर्मा

देना होगा पूरा हिसाब

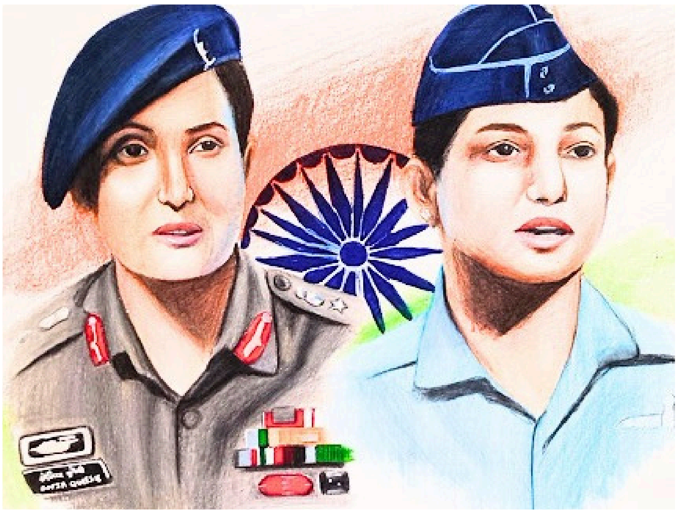

पहलगाम की वादियों में,
जहाँ बर्फ़ गाती है,
प्रकृति की गोद में,
हर साँस मुस्कुराती है।

पर एक दिन वहाँ,
छाया घना अंधेरा,
निर्दोषों का खून बचा,
टूटा सपनों का बसेरा।

क्यों बेकसूरों पर,
बरसा वह कहर?
किसने लिखा यह,
दर्द का वह पहर?

हर आह में छुपा,
एक सवाल गहरा,
न्याय का आलम हो,
या रहे सिर्फ़ अंधेरा?

पहलगाम रोता है,
चीखें गूँजती हैं,
खामोश चोटियाँ,
खून की बात कहती हैं।

हिसाब माँगता है,
हर दिल जो टूटा,
हर सपना जो बिखरा,
हर जीवन जो लूटा।

न चुप रहेगा अब,
यह ज़मीर हमारा,
न्याय की आग में,
जल उठेगा सारा।

पहलगाम की पुकार,
सुनेगा हर इंसान,
हिसाब होगा पूरा,
बनेगा नया विधान।

– डॉ. शरद शर्मा

श्रीमती दिशा मिश्रा

कवयित्री एवं लेखिका

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती शांति त्रिपाठी।**
- पिता का नाम : **श्री आर. एस. त्रिपाठी।**
- पति का नाम : **श्री दिनेश मिश्रा।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर, बी. एड. एवं केंद्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण।**

निवास स्थान

- **भोपाल, मध्य प्रदेश।**

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों।**

साहित्यिक अनुभव

- **विगत कुछ वर्षों से सक्रिय लेखन।**

सत्यापन

मैं सत्यापित करती हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रही हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

- **काव्य लक्ष्मी**

सरहद का सिपाही

सीमा पर तैनात खड़ा है
सीना उसका फौलाद बड़ा है
देश की रक्षा के खातिर,
सीना ताने वीर खड़ा है,
आँधियों में राह बनाता,
सच्चा भारत वीर बड़ा है।

सपना फ़ौज में जाने को लेकर
सरहद पर यूँ अंगार बना है
दिल और जान वार दे वतन पे
ऐसा अमर वीर जवान बना है !
हर दुश्मन को मात दे ऐसा
भारत का अभिमान बना है

सिर ऊँचा, दिल में जोश बड़ा है
खुद सर पे लेकर कफन खड़ा है
लक्ष्य मात्र बस देश प्रेम का
मर मिटने का ये संकल्प बड़ा है !
देशभक्ति का वचन निभाने,
सरहद पे अडिग खड़ा है ।

– दिशा मिश्रा

सिंदूरी ऑपरेशन

तुम इश्क़ - विश्क़ में पड़े रहो
वो घात लगाकर मारेंगे
तुम रील बना लो ख़ूब यहाँ
वो रियल में खून बहायेंगे

चालें वो ऐसी चलते हैं
तुम समझ के भी अनजान बनो
संग संग तुम्हारे चलते हैं
पर बाज़ चाल से ना आते हैं

रिश्तों पे घुसपैठ यहाँ
अच्छे बुरे का ज्ञान नहीं
मैं ही सच हूँ मैं ही सच्चा
सुनने को तैयार नहीं

दुर्दशा देश की निश्चित है
जो युवा का ऐसा हाल हुआ
संस्कार जहाँ लगे बेड़ियाँ
वह देश प्रेम कहाँ से लाओगे ।

– दिशा मिश्रा

श्री रमापति मौर्य

हिन्दी प्रवक्ता, कवि एवं लेखक

स्वपरिचय

- माता का नाम : **स्व. श्रीमती भानमती देवी।**
- पिता का नाम : **स्व. श्री रामराज मौर्य।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर (हिंदी, संस्कृत व राजनीति शास्त्र), बी. एड. एवं विधि स्नातक।**

निवास स्थान

- **इटावा, उत्तर प्रदेश।**

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों।**

साहित्यिक अनुभव

- **विगत दो वर्षों से सक्रिय लेखन।**

सत्यापन

मैं सत्यापित करता हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रहा हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

हम चाह रहे हैं

हम चाह रहें हैं भारत के,
जन-जन में जज्बा जग जाये।
मातृभूमि माँ से प्यारी ,
ये भाव सभी में जग जाये।।१।।

स्वर्ग से सुंदर सपनों से न्यारी ,
मातृभूमि होया करती।
लाखों लोग शहीद हुए ,
मिशाल आज मिला करती।।२।।

सबसे बड़ा राष्ट्र हित है ,
शेष गौण हो जाते।
राष्ट्र -सुरक्षा, राष्ट्र-हितों में,
वीर लोग मर जाते ।।३।।

जिनके अंदर देश- प्रेम ,
निःस्वार्थ भावना जगती।
जीवन की सारी सुविधायें,
उनको कड़वी लगती।। ४।।

मातृभूमि पर मरने वाला,
कभी नहीं मर सकते।
राणा -शेखर -वीर भगत सिंह,
जैसे जिन्दा रहते।।५।।

जिनको अपनी मातृभूमि से,
कोई प्यार नहीं होता ।
ऐसे नीच कमीनों का ,
कोई सम्मान नहीं होता।।६।।

लड़ते-लड़ते गोली खाते,
फिर भी नहीं हटा करते।
एक अकेले बीसों पर,
भारी वीर पड़ा करते।।७।।

स्वाभिमानी देशभक्त,
दुश्मन से नहीं डरा करते।
चीर-चीर दुश्मन का सीना,
रक्तपान किया करते।।८।।

देश है सब का, सभी को,
प्यार करना चाहिए।
हर सांस जिंदगी का,
निज देश देना चाहिए।।९।।

एक नहीं सौ बार कहेंगे,
भारत वर्ष हमारा है।
भारत माँ के कण-कण में ,
बसता प्राण हमारा है।।१०।।

गौरव होते वीर देश के ,
मर्यादा उनकी होती।
उनकी ही मर्यादा से,
मर्यादा कायम होती।।११।

– रमापति मौर्य

भारत माँ सबकी माँ

भारत माँ सबकी माँ,
मान बढ़ाना होगा।
स्वार्थ से ऊपर उठकर,
सब को लड़ना होगा।।१।।

तेरे बलिदानों से निश्चित ,
माँ का मान बढ़ेगा ।
वसुंधरा पर देश हमारा,
अनुपम देश बनेगा।।२।।

मन- मुटाव हर भेद मिटा कर,
एक साथ चलना होगा।
हर प्रकार से भारत माँ का,
मान बढ़ाना होगा।।३।।

भारत माँ की लाज बचाने ,
सबको आना होगा ।
दुष्ट दुशासन चीर खींचते,
उन्हें मिटाना होगा।।४।।

अमर शहीदों की राहों पर,
तुझको चलना होगा।
वीर भगत सिंह -शेखर बनकर,
तुझको लड़ना होगा।।५।।

जयचंदों से भारत को,
तुझे बचाना होगा।
कुर्बानी के पथ पर वीरों,
तुझको बढ़ाना होगा।।६।।

भारत माँ का निर्दयता से,
निशचर दोहन करते।
लूटपाट करने का,
होड़ लगाया करते।।७।।

निजी स्वार्थ के चक्कर में,
जो धर्म भुलाया करते हैं।
घर की इज्जत बाजारों में,
खुलकर बेचा करते हैं।।८।।

लोग सियासत के चक्कर में,
न्याय- धर्म सब भूल गये।
निजी स्वार्थ के चक्कर में,
सारी मर्यादा भूल गये।।९।।

त्याग और बलिदान जहाँ पर,
लोग भुलाया करते हैं।
अपने भूलों पर केवल ,
अश्रु बहाया करते हैं।।१०।।

अमर शहीदों के सपनें,
सपनें ही आज दिखा करते।
जिन पर उन्हें भरोसा था,
वे केवल लूट किया करते।।११।।

– रमापति मौर्य

श्रीमती पुष्पलता जी

शिक्षिका, कवयित्री एवं लेखिका।

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती सुमित्रा देवी**।
- पिता का नाम : **श्री लक्ष्मी नारायण शर्मा** ।
- पति का नाम : **श्री अमित कुमार**।
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर (हिंदी) एवं बी. एड.**।

निवास स्थान

- **बहादुरगढ़, हरियाणा**।

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों**।

साहित्यिक अनुभव

- **विगत २८ वर्षों से सक्रिय लेखन**।

सत्यापन

मैं सत्यापित करती हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रही हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

आज़ादी

ऐसे ही न हमने आज़ादी पाई होगी,
क्रूर शासकों ने गोली चलाई होगी।

पल-पल खौफ़ का साया मंडराया होगा,
एक-एक सांस पर पहरा बिठाया होगा,
निहत्थों पर अपना बल दिखाया होगा,
रोम रोम में आतंक बसाया होगा।

निर्दोषों को काले पानी की सजा सुनाई होगी,
ऐसे ही न हमने आज़ादी पाई होगी।

सुहागानों ने अपना सुहाग लुटाया होगा,
बहनों ने अपना भाई खोया होगा,
बच्चों ने अपना बचपन खोया होगा,
बूढी आँखों ने आज़ादी का सपना संजोया होगा।

लहू की बूंद-बूंद से क्रांति की ज्वाला जलाई होगी,
ऐसे ही न हमने आज़ादी पाई होगी।

कैसा काला साया मंडराया होगा,
अपने ही देश में मुंह पर ताला लगाया होगा,
जिसने भी आवाज उठाई होगी,
गोली सीने पर खाई होगी,
ऐसे ही न हमने आज़ादी पाई होगी।

जलियांवाला बाग में नरसंहार मचाया होगा,
चील-कौओं से असमान भरमाया होगा,
देख भीषण हत्याकांड आस्मां भी कांपा होगा,
अनगिनत जुल्मों को पूर्वजों ने सहा होगा ।

जनसमूह के लहू से धरती नहाई होगी,
ऐसे ही नहीं हमने आज़ादी पाई होगी ।

सब ने मिलकर आज़ादी का स्वर गया होगा,
इंकलाब जिंदाबाद का नारा खुलकर लगाया होगा,
क्रांतिकारियों ने फांसी को गले लगाया होगा,
लोगों को आज़ादी का पाठ पढ़ाया होगा।

अपने विचारों से क्रांति जनता में जगाई होगी,
ऐसे ही न हमने आज़ादी पाई होगी।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक एक स्वर उठा होगा,
एकता का पाठ शासन को पढ़ाया होगा,
आज़ादी का स्वर चहुँ दिशा से गूंजा होगा,
चारों दिशाओं में तिरंगा लहराया होगा।

नारी देश की लक्ष्मीबाई कहलाई होगी,
ऐसे ही न हमने आज़ादी पाई होगी।

– पुष्पलता

तेरी याद

ऐ ! मेरे देश तेरी याद बहुत सताती है ।

माटी यहाँ भी है,
माटी वहाँ भी है,
पर सौंधी खुशबू वाली बात यहाँ कहाँ ?
माटी मेरे देश की शहीदों के खून से नहाई है,
तभी तो हवा में आज़ादी की सांस लहराई है ।

ऐ ! मेरे देश तेरी याद बहुत सताती है ।

हवा यहाँ भी है,
हवा वहाँ भी है,
पर वह अपनेपन वाली बात कहाँ ?
जब यहां की हवा तन मन को ठंडा करती है,
ठिठुरन पैदा करती है,
सच कहता हूँ -
मां के हाथ का बुना स्वेटर
गरमाहट पैदा करती है ।

ऐ ! मेरे देश तेरी याद बहुत सताती है ।

भीड़ यहाँ भी है,
भीड़ वहाँ भी है,
पर अपने लोगों की सूरत कहाँ ?
अक्सर भीड़ में अकेला हो जाता हूँ,
अपनों के चेहरे देखने को तरस जाता हूँ ,
सच कहता हूँ -
मेज़ पर रखी घर वालों की
तस्वीर देख रो जाया करता हूँ ।

ऐ ! मेरे देश तेरी याद बहुत सताती है ।

नदी यहाँ भी है,
नदी वहाँ भी है,
पर गंगा स्नान वाली बात कहाँ ?
जब नदी किनारे बैठ
घंटों बिताने का मन करता है,
सच कहता हूँ -
बाल्टी भर पानी में पैर
डूबो कमरे में बैठा रहता हूँ ।

ऐ ! मेरे देश तेरी याद बहुत सताती है।

भाषा यहाँ भी है,
भाषा वहाँ भी है,
पर वह अपनेपन वाली बोली कहाँ ?
सूट बूट में तना विदेशी भाषा बोलता हूँ,
जब अपनी बोली बोलने का मन करता है,
सच कहता हूँ -
आईने के आगे खड़ा घंटों खुद से बातें करता हूँ ।

ऐ ! मेरे देश तेरी याद बहुत सताती है।

– पुष्पलता

श्री तुलसीराम "राजस्थानी"

अध्यक्ष : सरस्वती काव्य-कला मंच,
प्रधान सम्पादक : कुमावत क्षत्रिय पत्रिका।
ब्रांड एंबेसडर : स्वच्छ भारत मिशन।

स्वपरिचय

- माता का नाम : **स्व. श्रीमती गलकू देवी**।
- पिता का नाम : **स्व. श्री सुवालाल कुमावत।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातक।**

निवास स्थान

- **नावां सिटी, राजस्थान।**

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों**।

साहित्यिक अनुभव

- **विगत ४० वर्षों से सक्रिय लेखन**।

सत्यापन

मैं सत्यापित करता हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रहा हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

प्यारा हिंदुस्तान बनाएं

इस धरती पर मानवता का, न्यारा एक जहान बनाएं,
आओ हम भारत को फिरसे, प्यारा हिंदुस्तान बनाएं।

सेवा के रंग में, मन रंग ले, जनसेवक सच्चे सब बन लें,
द्वार-द्वार पे नवसृजन का, हरदिल में अरमान जगाएं,
आओ हम भारत को फिरसे, प्यारा हिंदुस्तान बनाएं।

खड़े रहें हम अपने पथ पर, लाख मुसीबत भी आने पर,
साहस का लेकर सहारा, हर मुश्किल आसान बनाएं,
आओ हम भारत को फिरसे, प्यारा हिंदुस्तान बनाएं।

क्या हिन्दू क्या मुसलमान, सबका खून है एक-समान,
एकता के सूत्र में बंध, अलग अपनी पहचान बनाएं,
आओ हम भारत को फिरसे, प्यारा हिंदुस्तान बनाएं।

सत्यता के दीप जलाए, अहिंसा को सब अपनाएं,
जात-पांत का भेद मिटाकर, बापू का सम्मान बढाएं,
आओ हम भारत को फिरसे, प्यारा हिंदुस्तान बनाएं।

– तुलसीराम 'राजस्थानी'

सरहद के रखवाले

जिनकी वजह से
सरहद की
हो रही रखवाली है
जिनकी वजह से
चमन-ए-वतन में
हो रही हरियाली है।

अपनी खुशियों में
तुम भुला नहीं देना
उनकी कुर्बानियां
जिनकी बदौलत
हम हरवर्ष
मनाते होली-दीवाली हैं।।

अपनों को छोड़ कर
जिन्होंने सरहद को ही
बना लिया ठिकाना है
सरहद ही परिवार जिनका
सरहद ही आशियाना है।

उन सरहद के रखवालों को
अपने दिल में बसाए रखना
जिनका मकसद ही
मातृभूमि की खातिर मर मिट जाना है।।

– तुलसीराम 'राजस्थानी'

श्री मनोज मंजुल

प्रधानाचार्य-श्री रामस्वरूप बिरला चमेली देवी कन्या जूनियर हाई स्कूल, कासगंज से एवं मंच संचालक।

स्वपरिचय

- माता का नाम : **स्व. श्रीमती सरला देवी**।
- पिता का नाम : **स्व. श्री राम प्रकाश गुप्ता।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातक एवं बी. एड.।**

निवास स्थान

- **कासगंज, उत्तर प्रदेश।**

लेखन विधा

- **पद्य**

साहित्यिक अनुभव

- **विगत कई वर्षों से सक्रिय लेखन**।

सत्यापन

मैं सत्यापित करता हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रहा हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

प्यारा हिंदुस्तान

प्यारा हिंदुस्तान हमारा प्यारा हिंदुस्तान है।
ऋषियों की संतान जिसमें वीरों का मैदान है।।

आजादी के रंग में खुशियों की तरंग में,
झूम रहा है बच्चा बच्चा भारत का इस उमंग में।
आजादी की बलवेदी पर चढ़ने का अभिमान है,
प्यारा हिंदुस्तान हमारा प्यारा हिंदुस्तान है।
ऋषियों की संतान जिसमें वीरों का मैदान है।।

खुले मातृ के बंधन सारे टूटी युग की काया है,
द्वार खुला है आजादी का गूंज उठा यह नारा है।
बोल उठा भारत का कण कण शुभ मेरा बलिदान है,
प्यारा हिंदुस्तान हमारा प्यारा हिंदुस्तान है।
ऋषियों की संतान जिसमें वीरों का मैदान है।।

अमर रहे यह भारत शत शत माता यही पुकार रही,
हृदय तंत्र के तार तार से स्वतंत्रता झंकार रही।
गंगा और जमुना की लहरें करती कल कल गान हैं,
प्यारा हिंदुस्तान हमारा प्यारा हिंदुस्तान है।
ऋषियों की संतान जिसमें वीरों का मैदान है।।

– मनोज मंजुल

ये है मेरा हिंदुस्तान

ये है मेरा हिंदुस्तान जग में ऊंची इसकी शान।
दिल्ली इसके दिल की धड़कन मुंबई इसकी जान।।

लक्ष्मी बाई दुर्गा जैसी वीर यहां की नारी,
स्वतंत्रता का दीप जलाने भारत की अवतारी।
यहां मिलेंगे ख्वाजा हमको यहीं पर कृष्ण महान ,
ये है मेरा हिंदुस्तान-------------।।

गंगा यमुना और कावेरी नदियां कल कल बहतीं
जिनके जल से भारत भूमि हरी भरी हुई रहती।
हिमालय जैसा ऊंचा पर्वत देश की है पहचान,
ये है मेरा हिंदुस्तान-----------।।

भगत सिंह आजाद जैसे वीर यहां पर जन्मे,
रविंद्र नाथ टैगोर तिलक और गौतम नेहरू जन्मे।
शिवाजी बुद्ध प्रताप के जैसी भारत की संतान,
ये है मेरा हिंदुस्तान------------।।

भांत भांत की भाषा यारों यहां पर बोली जाए,
कन्नड़ ओड़िआ और तमिल भी यहां पर बोली जाए।
लेकिन दिल की धड़कन उर्दू, हिंदी इसके प्रान,
ये है मेरा हिंदुस्तान ----------।।

अंग्रेजों को सब ने मिलकर देश से है भगवाया,
किसी ने खाई लाठी गोली और सुहाग लुटाया।
देश की खातिर हुए शहीद राम कहीं रहमान,
ये है मेरा हिंदुस्तान -----------।।

रहे सलामत देश हमारा अब हो ऐसा काम,
मुस्लिम बने मंदिर का पुजारी हिंदू बने इमाम।
यही है अंतिम इच्छा मंजुल भारत बने महान,
ये है मेरा हिंदुस्तान ---------।।

– मनोज मंजुल

श्री विद्यानंद वागद्रे आनंद

लेखक एवं कवि

स्वपरिचय

- माता जी का नाम : **श्रीमती गंगा बाई वागद्रे।**
- पिता का नाम: **डॉ. तेजरत्न वागद्रे।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातक (वैद्य विशारद), जी.एम.एस.ओ. एवं स्नातकोत्तर ।**

निवास स्थान

- **बैतूल, मध्य प्रदेश।**

लेखन विधा

- **पद्य और गद्य दोनों।**

साहित्यिक अनुभव

- **विगत 57 वर्षों से सक्रिय लेखन।**

सत्यापन

मैं सत्यापित करता हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रहा हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

गज़ल

जान हथेली पर रखकर जिन विरो ने यह काम किया।
देश की खातिर मर मिटने का जग को ऐ पैगाम दिया।।

भूल कर भी भूल न करना भारत देश से टकराने की।
वर्ना रोंद के रख देंगे जैसा पाक को अंजाम दिया।।

देश दुनिया में रहे शांति पैगाम यही हमारा है।
प्रारंभ किया ना युध्द सदा अंजाम दिया।।

बंगलादेश को अलग करा हमने एक संदेश दिया था।
दुनिया लोहा मान गई थी आनंद ऐसा काम किया ।।

मेरे देश की सुंदरता यारो सबसे सुंदर है।
तभी तो देश मेरा मेरे दिल के अंदर हैं।।

यहाँ अरमान सभी के जुदा पर एक सोच है।
अपने अपने घर में यहाँ सभी सिकंदर है।।

– डॉ विघानंद वागद्रे आनंद बाकुड

हमें कसम है

हमें कसम है अवाम को जगा नहीं देते।
हमें चैन कहाँ दुश्मन को भगा नहीं देते।।

हम दोस्ती करके निभाते भी अंत तक।
चंद जैचंदो की तरह हम दगा नहीं देते।।

जो करे घात कायर बुजदिल बनकर।
सजाऐ मोत देते हैं उसको सला नहीं देते।।

हैं किसी में हिम्मत तो आंख दिखा पाऐ।
जननी जन्म भूमि पे जान लुटा देते हैं।।

तुमने अभी तक आनंद को नहीं जाना।
अपनी पे आ जाऐ तो लंका लगा देते हैं।।

– डॉ विघानंद वागद्रे आनंद बाकुड

श्री राजेन्द्र कुमार सैनी

संस्कृत शिक्षक, कवि एवं लेखक

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती बर्फी देवी।**
- पिता का नाम : **श्री ताराचंद सैनी।**
- शैक्षणिक योग्यता : **एम.ए., बी.एड.,पी.एच.डी.(संस्कृत)।**

निवास स्थान

- **जयपुर राजस्थान।**

लेखन विधा

- **पद्य एवं गद्य दोनों।**

साहित्यिक अनुभव

- **विगत कई वर्षों से सक्रिय लेखन।**

सत्यापन

मैं सत्यापित करता हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रहा हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

देश की मिट्टी बोल रही है

देश की मिट्टी बोल रही है,
सीना अपना खोल रही है।
दुश्मन पर बनके वो दुर्गा,
छाती उनकी छोल रही है।।

रक्त बहा कर निर्दोषों का,
वो खञ्जर से करते हैं वार।
मातृभूमि पर किएं हैं उसने,
अब तक सौ-सौ अत्याचार।

बचाने अपनी मर्यादा को वो,
अपने सत को तोल रही है।
देश की मिट्टी बोल रही है,
सीना अपना खोल रही है।।

रक्तरञ्जित हैं सीने जिनके,
आन की खातिर शीश कटे हैं।
अस्मिता की रक्षा हेतु अब,
सभी रक्षक सीमा पर डटे हैं।।

लहूलुहान हो छाती उनकी,
गर्जती हुई अब बोल रही है।
देश की मिट्टी बोल रही है,
सीना अपना खोल रही है।।

– डॉ राजेन्द्र कुमार सैनी

बस एक घाव और हो जाने दो

अभिलाषा है यही कि मेरे मन में,
बस भक्तिभाव और हो जाने दो।
सहस्त्र घाव होने पर भी तन पे,
बस एक घाव और हो जाने दो।।

देश की खातिर मैं मर जाऊंगा,
शत्रुविहीन उसे मैं कर जाऊंगा।
राष्ट्रप्रेम भाव और हो जाने दो,
बस एक घाव और हो जाने दो।।

रिपुदल पर अब टूट पड़ू मैं,
ज्वालामुखी बन फूट पड़ू मैं।
बस यही चाव और हो जाने दो
बस एक घाव और हो जाने दो।।

हर सांस का कर्ज चुकाऊं मैं,
माँ तेरा सर कभी ना झुकाऊं मैं।
तुझमें लगाव और हो जाने दो,
बस एक घाव और हो जाने दो।।

मिटा सकूं मैं शत्रु को हरदम,
टूट जाए उसका ये अजेय भरम।
इक ऐसा दाव और हो जाने दो,
बस एक घाव और हो जाने दो।।

– डॉ राजेन्द्र कुमार सैनी

श्रीमती मोनिका डागा 'आनंद'

गृहिणी, कवयित्री एवं लेखिका।

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती नर्मदा राठी**।
- पिता का नाम : **श्री प्रेम रतन राठी।**
- पति का नाम : **श्री आनंद डागा।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातक (बीबीए)।**

निवास स्थान

- **चेन्नई, तामिलनाडु**।

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों**।

साहित्यिक अनुभव

- **विगत ०३ वर्षों से सक्रिय लेखन**।

सत्यापन

मैं सत्यापित करती हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रही हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

आज़ादी का मतलब

अपने संविधान को सम्मान व नमस्कार,
स्वदेश से प्रेम अनुराग अगाढ़ अपार ।

सबको समान नागरिकता का अधिकार,
प्रसन्नचित्त आदर्श देश वासियों का व्यवहार ।

सत्य, शांति, अहिंसा, की जय जयकार,
दुश्मनों को करारी भीषण फटकार ।

मातृभूमि का मान-सम्मान रहे बरकरार,
सपनों को स्वतंत्रता का देना आकार ।

देश की प्रगति में बनना सच्चा भागीदार,
एकता, क्षमा, सात्विकता, संग परोपकार ।

देश की सेवा में शत प्रतिशत हिस्सेदार,
शूर वीरों की महिमा गाएं सारा संसार ।

गौरवान्वित उन्नत हो हमारी सभ्यता संस्कार,
रूढ़िवादी परम्पराओं का करें बहिष्कार।

ज्ञानार्जन सफल सुरक्षित अविष्कार,
विदेशी बंधनों से मुक्ति वतन से प्यार।

विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति हर बार,
जल थल नभ सेना में अद्भुत शक्ति आधार।

अखंडता की अक्षुण्ण जन शक्ति उपहार,
भाईचारे की प्रबल भावना ही अलंकार।

सभी के लिए शुभकामना सदाबहार,
विश्व बंधुत्व की "आनंद" डोर कारगार।

जय हिन्द ! जय भारत ! एकल परिवार

– मोनिका डागा आनंद

भारतीय सेना का सिपाही

कभी रेत पर चलता हूँ ,
हिम की गोद में पलता हूँ,
कर्तव्य पथ पर गतिमान,
ध्वज तिरंगा है मेरी शान,
राष्ट्र सेवा तन मन करता हूँ,
भारतीय सेना का सिपाही हूँ ।

माँ भारती का उपासक हूँ,
सैन्य बल का सहायक हूँ,
तूफ़ानों से नहीं मैं डरता,
शत्रु को धराशाई करता,
रिपु संहारक मृत्युदायक हूँ,
भारतीय सेना का सिपाही हूँ।

अदम्य साहसी शक्तिशाली हूँ,
शूरवीर तेजोमय बलशाली हूँ,
करता सच्ची देशभक्ति गहरी,
सीमा पर खड़ा सचेत प्रहरी,
सेवक हिंद का सौभाग्यशाली हूँ,
भारतीय सेना का सिपाही हूँ।

कर्तव्य के आगे मजबूर हूँ,
परिवार से भी अपने दूर हूँ,
सैनिक धर्म मैं वहन करता,
तिरंगे का श्रद्धा वंदन करता,
दुश्मनों के लिए खूँखार हूँ,
भारतीय सेना का सिपाही हूँ।

मातृभूमि का तिलक लगाता हूँ,
दुश्मनों की नींदे उड़ाता हूँ,
शांति, सुरक्षा स्थाई बनी रहे,
देशवासी भी "आनंद" से रहे,
लहू अपना बेख़ौफ़ बहाता हूँ,
भारतीय सेना का सिपाही हूँ।

– मोनिका डागा आनंद

श्री लोकेश कौशिक

सहायक प्रोफेसर (SIASTE) , कवि एवं लेखक

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती कुसुमलता जी ।**
- पिता का नाम : **श्री वीरेन्द्र कौशिक।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर एवं विद्यावाचस्पती।**

निवास स्थान

- **रोहतक, हरियाणा।**

लेखन विधा

- **पद्य एवं गद्य दोनों।**

साहित्यिक अनुभव

- **विगत ०३ वर्षों से सक्रिय लेखन।**

सत्यापन

मैं सत्यापित करता हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रहा हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

- **काव्य लक्ष्मी**

सिंदूरी आपरेशन

आपरेशन सिन्दूर !
पाकिस्तान का दूर हो गया फितूर,
भारतीय सेना ने कर दिया उसे मजबूर,
नहीं कोई मारा गया बेकसूर।

केवल आतंकी ठिकानों को ही नष्ट किया,
हुज़ूर भारत ने लोहा मनवा दिया और हुआ मशहूर।
देश की सेना का सम्मान करना जरूर,
घूमने गए पर्यटको का क्या था कसूर।

नवविवाहिता का मिटा दिया सिन्दूर
शांतिप्रिय भारत को कर दिया मजबूर
भारत ने भी बता दिया अपना दस्तूर
पहले छेड़ते नहीं, बाद में छोड़ते नहीं हुज़ूर।

– लोकेश कौशिक

सुन ओ पाकिस्तान

अरे !
सुन ओ पाकिस्तान ,
दुनिया को पता है तेरी दास्तान।
आतंकियों पर तू है मेहरबान,
तेरे साथ है चीन नाम का शैतान,
पर हम भी हैं वतन पर कुर्बान।

तेरे आतंकिस्तान को बना देंगे कब्रिस्तान,
मेरा भारत है महान।
सारी दुनिया देखकर इसे हैरान,
बस तू ही है हमें देखकर परेशान,
धोखे पर धोखा देना तेरी है शान।

आतंकियों का तू है गुलिस्तान,
अब तो संभल जा ए नादान,
कब तक यूँ ही बना रहेगा हैवान,
प्रेम और भाईचारे से बढ़ती है शान
अच्छे कर्मों से मिलता है सम्मान।

— लोकेश कौशिक

प्रो. श्री विमल शर्मा

विश्वविद्यालय शिक्षक, कवि एवं लेखक

स्वपरिचय

- माता का नाम : **स्व. सुशीला शर्मा ।**
- पिता का नाम : **स्व. सुन्दर लाल शर्मा ।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर एवं विद्यावाचस्पती।**

निवास स्थान

- **उदयपुर, राजस्थान।**

लेखन विधा

- **पद्य एवं गद्य दोनों।**

साहित्यिक अनुभव

- **विगत १० वर्षों से सक्रिय लेखन।**

सत्यापन

मैं सत्यापित करता हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रहा हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

वीर प्रताप

अरावली की छांव तले,
जहाँ बाज़ों के पंख चले,
उठा एक शेर धरा की जान,
प्रताप था वो, मेवाड़ की शान।

ना स्वर्ण-मुकुट, ना राज-महल,
बस सत्य, स्वाभिमान का बल,
हाथ में तलवार की धार,
धर्म हेतु था वो तैयार।

गौरवशाली, सच्चा राणा,
न झुका, न सीखा घबराना।
अकबर की समर-संधि ठुकराई,
स्वतंत्रता की राह अपनाई।

हल्दीघाटी गूंज उठा,
जब चेतक बिजली बन कूदा।
रक्त भले ही बहा अपार,
पर झुका न था वो वीर सवार।

ना रेशमी बिछौना था,
ना राजसी भोज-भंडार।
वन विहार, पर्वत की छांव,
मुख पर न था कभी तनाव।

"मातृभूमि! तुझको प्रणाम,
तेरे लिए सहूँ हर घाव।
कोई ना छूए तेरा मान,
जब तक रहे मेरा प्राण।"

हे भारत के नौ जवानो,
सुनो प्रताप के ये गान।
बलिदान से जो उजियारा हो,
वो ही है सच्चा बलिदान।

आज़ादी के वो दीप जले,
जो वीरों की साँसों से पले।
सलाम महाराणा के पथ को,
प्रातः स्मरणीय के आदर्श को |

वीर प्रताप को कोटि नमन,
वीर करे जिनका अनुसरण।
इतिहास गूँजे, यश अमर रहे,
विमल का है शत-शत नमन।

– प्रो. विमल शर्मा

तब और अब

कभी थी कविता, अमृत धारा,
बही देशभक्ति बन के प्यारा।
आजादी की अलख जगाती,
संस्कारों की लौ जलाती।

महाकाव्य के संग सजी थी,
चिंतन-मनन में रमी थी।
शब्द थे कोमल, भाव थे सुंदर,
हृदय में भरते मधुर सुगंधर।

पर अब कुंठित, बेबस, हारी,
अभिव्यक्ति की बेड़ी भारी।
नग्न शब्द औ' विष का प्याला,
मर्यादा का टूटा भाला।

अश्लीलता ने चादर डाली,
संस्कृति की कश्ती डगमगाई।
फूहड़ता का शोर उठ रहा,
ज्ञानहीनता जीत रहा।

ओ कवि! फिर दीप जलाओ,
शुद्ध विचारों से राह सजाओ।
वाणी में फिर अमृत घोलो,
संस्कृति का श्रृंगार करो।

कविता बने फिर से उजियारा,
देशभक्ति का हो अंगारा।
संस्कारों का दीप जले,
भारत फिर से स्वर्ण खिले!

– प्रो. विमल शर्मा

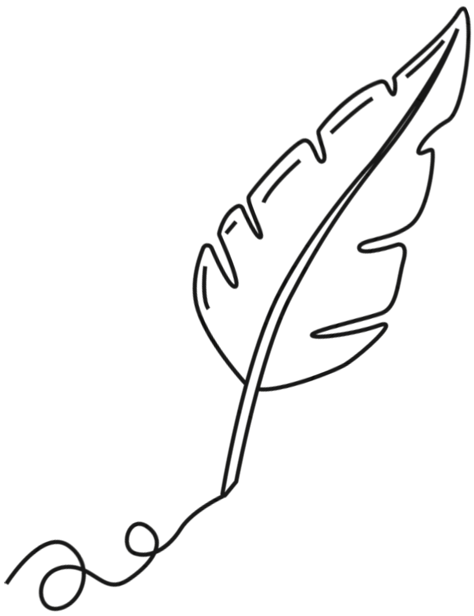

डॉ. चन्द्रशेखर सिंह

हिन्दी प्राध्यापक (विभागाध्यक्ष हिन्दी), कवि एवं लेखक

स्वपरिचय

- माता का नाम : **स्व. श्रीमती जानकी सिंह।**
- पिता का नाम : **श्री विश्वनाथ सिंह ।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर, विद्यावाचस्पती, यूजीसी नेट हिन्दी, डी-लिट. हिन्दी (मानद उपाधि)।**

निवास स्थान

- **रायगढ़ (छत्तीसगढ़)।**

लेखन विधा

- **पद्य एवं गद्य दोनों।**

साहित्यिक अनुभव

- **विगत कुछ वर्षों से सक्रिय लेखन।**

सत्यापन

मैं सत्यापित करता हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रहा हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

वीरों के संघर्षों ने

वीरों के संघर्षों ने,
मधुर बना दी दिशा हमारी !

कांटे थे राहों में मगर,
हौसले उनके फूल खिलाए ।
आशाओं के उजियारे से,
अंधियारे भी थर्राए ।
इतिहास की स्वर्णिम गाथा,
कहती कथा उनकी सारी ।

वीरों के संघर्षों ने,
मधुर बना दी दिशा हमारी !

त्याग कर-कर मर मिटे वो,
जीवन-मंत्र दिए हमें ।
पीड़ा और गुलामी से,
बंधन मुक्त किये हमें ।
हर आंधी में राह बनाई,
ज्वालाओं में नाव उतारी ।

वीरों के संघर्षों ने,
मधुर बना दी दिशा हमारी !

त्याग, तपस्या देश के खातिर-
गूंज उठे थे रण के नारे ।
हिचकोलें भरी ज़िन्दगी थी,
निर्भय हो-हो संवारे ।
लहू से सींचा धरती को,
जगमग हुई सुबह हमारी ।

वीरों के संघर्षों ने,
मधुर बना दी दिशा हमारी !

– डॉ. चन्द्रशेखर सिंह

श्रम-वीरों की श्रम-साधना

श्रम-वीरों की श्रम-साधना,
राष्ट्र उन्नति गढ़ती है !

हाथों में छाले होते हैं,
हौसले मोती जैसे !
धूल-धूल में फूल-फूल,
कर्मशील के सपने कैसे !
पथ में पसीने भी,
मौज़ में बहती है !

श्रम-वीरों की श्रम-साधना,
राष्ट्र उन्नति गढ़ती है !

न भवन बने, न पुल उठे,
न खेती हो, न उद्योग चले !
राष्ट्र-देह की प्राण-शक्ति है,
देश की धक-धक, धड़कन चले !
कंधों पर बोझ उठाने से,
माटी सोना बनती है !

श्रम-वीरों की श्रम-साधना,
राष्ट्र उन्नति गढ़ती है !

हाथों को आदर देने से,
बनी हमारी पहचान है !
श्रम के जगमग दीये से-
रोशन हिन्दुस्तान है !
मधुर स्वप्न बोयें हम तो-
पीढ़ियों तक फलती है !

श्रम-वीरों की श्रम-साधना,
राष्ट्र उन्नति गढ़ती है !

– डॉ. चन्द्रशेखर सिंह

श्रीमती नीना श्रीवास्तव

गृहिणी, कवयित्री एवं लेखिका।

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती कृष्णा श्रीवास्तव।**
- पिता का नाम : **श्री वीरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव।**
- पति का नाम : **श्री कमलेश कुमार श्रीवास्तव।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर (हिन्दी एवं अर्थशास्त्र)।**

निवास स्थान

- **जबलपुर, मध्य प्रदेश।**

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों।**

साहित्यिक अनुभव

- **विगत कुछ वर्षों से सक्रिय लेखन।**

सत्यापन

मैं सत्यापित करती हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रही हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

पंद्रह अगस्त का दिन

पंद्रह अगस्त का दिन कहता है,
आजादी अभी अधूरी है,
सपने सच होने बाकी हैं,
राबी की शपथ न पूरी है।

ऐसे वीर धीर ज्ञानी,
तुम ऐसे बनो सुजान,
जिसे देख कर दुनिया बोले,
जय जय जय हिंदुस्तान।

बढ़ के मंजिल पा लो अपनी,
ऊंची भरो उड़ान तुम,
सब देशों में देश हमारा,
भारत देश महान।

नफरत करना नहीं किसी से,
करना प्यार सभी को,
गुरु चरणों की करो वंदना,
सादर नमन सभी को।

यह दिन उन वीरों की
पावन स्मृति का दिन है,
जिनने तेरे नीचे बैठे कसम खाई,
दीवाने वो आजादी के दीवाने।

हम अपने प्राणों की बलि देकर
तेरी आन न जाने देंगे,
जाए प्राण भले ही जाए
तेरा सम्मान न जाने देंगे।

भारत के श्रृंगार प्यारे झंडे,
तुम आजादी के प्रतीक हो,
दुश्मन को हरगिज इस ओर,
ना आंख उठाने देंगे।

पंद्रह अगस्त की पवन बेला पर
आजादी का पर्व मनाएंगे
मातृभूमि को कर प्रणाम
अपना शीश नवाएंगे

– नीना श्रीवास्तव

प्यारा हिंदुस्तान

सुंदर सुंदर प्यारा प्यारा,
इस धरती का वेश है।
भारत देश हमारी शान है
हुआ आजाद हमारा देश है।।

सदियों रहे गुलाम आज के दिन
आजादी सबने पाई है।
कोटि कोटि बलिदानों के बल से,
ये आजादी आई है।।

आगे बढ़े जवान तो पीछे न हटे,
कट गए थे शीश मगर वहीं डटे।
वीरों के ही बलिदान ने देश को,
मंजिल तक पहुंचाया हैं।।

पुलक रहा कण कण धरती का,
बना सुहागन देश है,
आज खुशी का ये शुभ दिन आया,
हुआ आजाद हमारा देश है।।

आंच न आवे आजादी पर ,
यही अमर संदेश है।
चरणों में है शीश नवाया,
हुआ आजाद हमारा देश है।।

– नीना श्रीवास्तव

श्रीमती नीलम सगोरिया

व्याख्याता, कवयित्री एवं लेखिका।

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती रामकली जी।**
- पिता का नाम : **स्व. श्री मानिक चंद जी।**
- पति का नाम : **श्री मोतीलाल सगोरिया।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर (हिन्दी)।**

निवास स्थान

- **भोपाल, मध्य प्रदेश।**

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों।**

साहित्यिक अनुभव

- **विगत ०२ वर्षों से सक्रिय लेखन।**

सत्यापन

मैं सत्यापित करती हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रही हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

वीर भारती

नमन देश के वीर सपूतों,
बलिदानी तुम वीर सपूतों ।

जब जब आया राष्ट्र में संकट,
शौर्य भारतीय का हुआ प्रकट ।
नर हो या फिर हो वो नारी,
दुश्मन बल पर हर वीर है भारी ॥

नमन देश के वीर सपूतों,
बलिदानी तुम वीर सपूतों ।

मुखौटा पहन वो बने थे संगी,
मन ग्रसित हृदय में प्रेम की तंगी ।
मित्रभाव नही चालाक है दुश्मन,
दमन करा वीरो ने भाग खडे फिरंगी ॥

नमन देश के वीर सपूतों,
बलिदानी तुम वीर सपूतो ।

धन्य - धन्य हुई वसुधा भारती,
जन्म लिये जहाँ वीर भारती ।
बलिदानी वीरो को मां दुलारती,
नित दिन करे मां वसुधा की आरती ॥

नमन देश के वीर सपूतों,
बलिदानी तुम वीर सपूतों ॥

— नीलम सगोरिया

विश्व परी माँ भारती

हिन्द की धरती हरी-भरी ।
इस जग में मानों विश्व परी ॥

शीश मुकुट पर सजा हिमालय ।
बर्फ शिलाओ से ढका वक्षालय ॥

धानी रंग की ओढ़ी चुनरियाँ ।
केशों-सी फैली कारी बदरिया ॥

खुले केशों को माँ जब सँवारे ।
सुंदर फूलों से धरा रुप निखारे ॥

मध्य में कोमल कमर कटि तल ।
माँ भारती का सुंदर-सा उदर तल ॥

बीच में बहती निर्मल-नदियाँ।
दिखे माँ की सुन्दरं दन्त-पंक्तियाँ ॥

झरनों से फूटे नीर फव्वारे ।
धरा खिलखिलाए, नैनो में तारे ।

पूर्व-पश्चिम खेतों की हरी कड़ियाँ।
लागे हाथों मे सोहें हरी चूड़ियाँ ॥

हिलोरे मारता हिन्द महासागर ।
वसुधा के पैर पखारे भर गागर ॥

ऐसी माँ की छवि मन सोहे ।
अद्वितीय रुप जन मन मोहे ॥

क्षणभुंगर नही ये राष्ट्र प्रेम ।
अखंड रहे मेरी भक्ति व देशप्रेम ॥

– नीलम सगोरिया

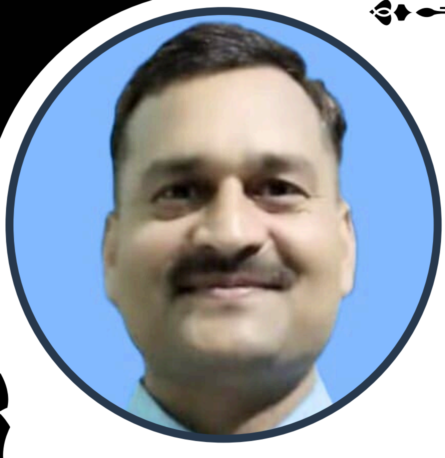

श्री भगवान दास शर्मा 'प्रशांत'

माध्यमिक शिक्षा विभाग में शिक्षक, कवि एवं लेखक

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती लौंगश्री देवी।**
- पिता का नाम : **स्व.श्री राम शंकर शर्मा ।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर एवं बी. एड.।**

निवास स्थान

- **इटावा (उत्तर प्रदेश)।**

लेखन विधा

- **पद्य एवं गद्य दोनों।**

साहित्यिक अनुभव

- **विगत कुछ वर्षों से सक्रिय लेखन।**

सत्यापन

मैं सत्यापित करता हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रहा हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

सैनिक

धन्य धरा भारत के वीरों,
तुमको सौ सौ बार नमन।
जाँ निछावर देश की लिए
करके सींचा सदा चमन।।

अरे धन्य है जीवन योद्धा का,
शीत- ताप सब कुछ सहकर।
प्राण भी समर्पित कर देता है,
जब वक्त पड़े तो देश खातिर।।

माटी का कर्ज चुकाने को,
तुम सीमाओं पर डटे अटल।
बेटे जैसा फर्ज निभाने को,
सब बाधाएँ भी सही जटिल।।

रहेगा देश तुम्हारा ऋणी सदा,
बलिदान तुम्हारा रहेगा अजर।
रहो देव तुल्य तुम पूज्य सदा,
गाथायें तुम्हारी रहे सदा अमर।।

निर्भीक सदा ही डटे खड़े,
दुश्मन के संमुख सीमा पर।
तुम दृढ़ होकर सन्मध्य खड़े,
प्राणों की परवाह किए बगैर।।

सैनिक धर्म को अपनाया ले,
कठिन साधना का व्रत कर।
अपना सब कुछ लुटा डाला,
इस मातृभूमि की सेवा पर।।

– भगवानदास शर्मा 'प्रशांत'

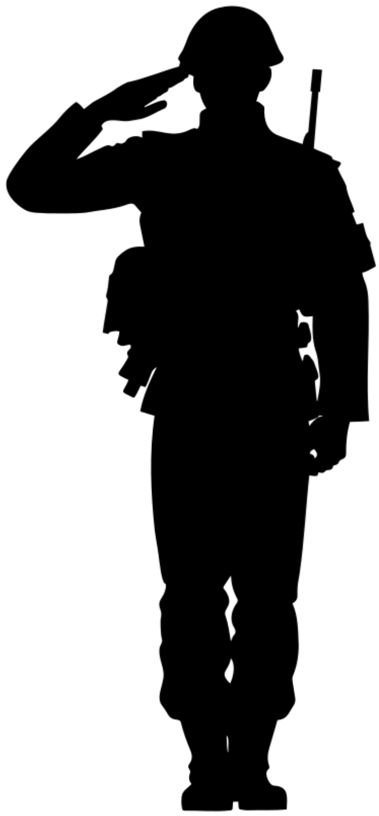

वतन के रखवाले

हम भारत की उम्मीदें है,
सीमाओं पर खड़े अटल।
भारत माँ के वीर सिपाही,
धीर, भीर, गंभीर अचल।।

देशभक्ति का जज्बा लेकर,
शान से वर्दी धारी है।
आन, मान और शान खातिर,
जाँ भी हमने वारी है।।

वीर पुत्र भारत माता के,
केसरिया मतवाले हैं।
हिंद महासागर, सीमाओं ,
के चौकस रखवाले हैं।।

हम रक्षक ऊंचे हिमाद्रि के,
हिमशीत में लड़ लेते हैं।
लेह शीत, तप्त रेगिस्तान,
हर आफत सह लेते हैं।।

हम वंशज राणा प्रताप के,
भले घास की रोटी खांएगे।
मगर किसी जुल्मी के आगे
कभी मस्तक नहीं झुकाएगे।।

— भगवानदास शर्मा 'प्रशांत'

पहलगाम की आतंकी घटना

पहलगाम की विभीषिका है,
रही अब चीखती पुकारती।
निर्दोषों को क्यों मार डाला,
बहुत आहत हुई मां भारती।।

आतंकवाद को जो पोषकर,
है लाशों पर रोटियाँ सेंकते।
इंसानियत को भी मार कर,
वे मजहब की बातें फेंकते।।

आक्रोश छाया सारे देश में,
कई बुझा दिये घर के दिए।
आतंकियों की कमर तोड़ी,
जिसने नव सिंदूर पौंछ दिए।।

पाक तेरे नापाक मंसूबे सभी,
हुए पस्त, अरमान हिल गए।
ऑपरेशन सिंदूर की गूंज से,
आतंकवादी मिट्टी मिल गए।।

बदहाल पाकिस्तान सुन जरा,
हरेक करनी की सजा पाएगा।
अभी सिंधु जल किया बंद है,
आगे भी तू मुंह की खाएगा।।

बहशी पूछ मजहब मार डाले,
मेरे कई निर्दोष निहत्थे भारती।
अब इस्लाम पर्याय बन चुका,
सारे विश्व, आतंक का सारथी।।

अब कुचलना ही विकल्प था,
आतंक रूपी पोषित सर्प को।
सम्पूर्ण जगत भी ध्यान दे ले,
कोई प्रोत्साहन न दे दर्प को।।

दुश्मन को माकूल जवाब दिया,
सक्षम है नेतृत्व, सैन्य शक्तियाँ।
आफत की घड़ी में एकजुट थी,
सब संग राजनीतिक शक्तियाँ।।

– भगवानदास शर्मा 'प्रशांत'

श्री उम्मेद सिंह भाटी

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य (माध्यमिक शिक्षा),
कवि एवं लेखक

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती कमला भाटी।**
- पिता का नाम : **स्व.श्री बस्तीराम भाटी।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर एवं बी. एड.।**
- संपर्क सूत्र **: 9414673660।**

निवास स्थान

- **नागौर (राजस्थान)।**

लेखन विधा

- **पद्य एवं गद्य दोनों।**

साहित्यिक अनुभव

- **विगत १८ वर्षों से सक्रिय लेखन।**

सत्यापन

मैं सत्यापित करता हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रहा हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

सीमा के प्रहरी

मातृभूमि के वीर सपूत हम,
हम सीमा के प्रहरी।
बहुत सहा है; अब तक हमने,
अब ना सहन करेंगे।
टूट पड़ेंगे रिपुदल पर,
बनकर के हम केहरी।।
बढे चलो तुम वीर साथियों,
एक साथ प्रहार करो।
विजय हमारी निश्चित होगी
भाग न पाए शत्रु हमारे,
चुन-चुन कर संहार करो।।
उठाकर गाण्डीव अर्जुन सा
महाभारत का दोहरान करो।।
लक्ष्मी बाई और शिवाजी
महाराणा को याद करो।
रुकना नहीं पथ में कहीं,
रोके यदि यमराज भी,
मातृभूमि की बलि वेदी पर,
हंसते-हंसते प्रस्थान करो।।

— **उम्मेद सिंह भाटी**

राष्ट्र प्रेम

उर में नेह का दीप जला,
कर शमित घृणा का अंधियारा।
प्रेम का दीप प्रज्वलित कर,
कर जग में अमन का उजियारा।।
राष्ट्र प्रेम कण-कण में चमके,
द्वार-द्वार हो खुशहाली।
मातृभूमि की माटी से आती,
प्रेम की खुशबू मतवाली।।
तुच्छ स्वार्थ, अहंकार, घृणा त्याग कर,
लगा भाल पर स्नेह का चंदन।
ऊंच-नीच का भेद मिटाकर,
कर हर क्षण; मातृभूमि का वंदन।।
उर में नेह का दीप जला,
कर शमित घृणा का अंधियारा।
प्रेम का दीप प्रज्वलित कर,
कर जग में अमन का उजियारा।।

– उम्मेद सिंह भाटी

श्रीमती मंजू शर्मा

अध्यापिका, कवयित्री एवं लेखिका।

स्वपरिचय

- माता का नाम : **श्रीमती रुपा शर्मा**।
- पिता का नाम : **श्री प्रकाशचंद्र शर्मा।**
- पति का नाम : **श्री जितेन्द्र शर्मा।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर (विज्ञान) एवं बी. एड. ।**

निवास स्थान

- **सूरत, गुजरात**।

लेखन विधा

- **गद्य और पद्य दोनों**।

साहित्यिक अनुभव

- **बाल्य काल में विद्यालय स्तर से ही सक्रिय लेखन**।

सत्यापन

मैं सत्यापित करती हूँ कि आगामी रचनाएं मेरे द्वारा स्वयं सृजित हैं जिन्हें अन्य किसी पटल पर प्रकाशन हेतु प्रेषित नहीं किया है। मैं अपनी कृतियाँ स्वेच्छा से इस संकलन में प्रस्तुत कर रही हूँ। उक्त रचनाओं पर सदैव मेरा एकाधिकार सुरक्षित होगा।

बिसात

चित्र कुछ विचित्र है,
यह कौन सा चरित्र है,
विरंज सब हो रहा,
अथाह रंज का इत्र है।

रिश्तो का भी साथ है,
सब की नीति साफ है,
गलती कहां माफ है,
हर मन में ख्वाफ हैं।

अगला दाव मेरा है,
रणनीति का घेरा है,
ये समय का फेरा है,
चौतरफा अंधेरा है।

ये काले खाने काले हैं,
राजा वज़ीर मतवाले हैं,
प्यादा की औकात नहीं,
सबके मन में भले हैं।

हाथी, घोड़ा, ऊंट, है
सब दिखावे की पूछ हैं
उलट-पलट चाल है
सबके मन में लूट है।

यह कौन सी बिसात हैं,
केवल अंधेरी रात है,
हसरतों की आड़ में,
निज दर्द की सौगात है।

– मंजू शर्मा

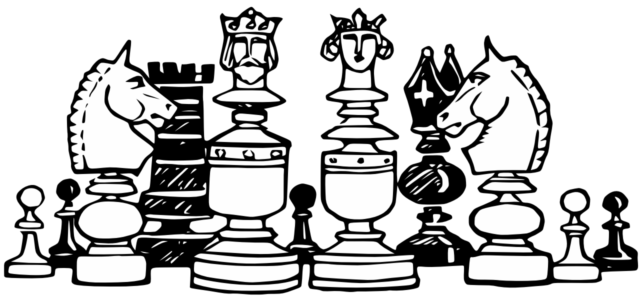

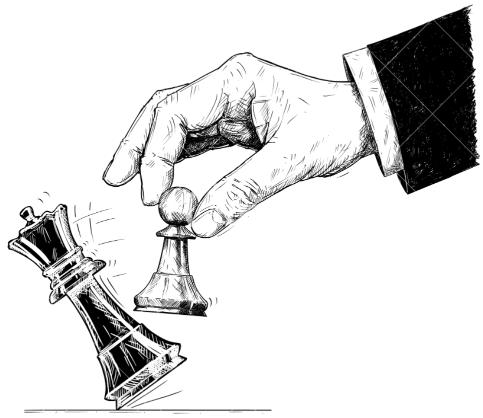

स्वर्णिम काल में भारत

जान से प्यारा मेरा वतन है
इसके लिए जो दु वो कम है,
इसकी मिट्टी इत्र है मेरी,
खुश्बू हवा की मित्र है मेरी,
सैनिक इसके दसों दिशाएं,
हिमालय गंगा जल से पाखरे,
जन-जन वतन का गान करे है
ऋषि मुनि सब बखान करें हैं,
ख्याति देश की सात समुंदर,
भाती भाती के लोग हैं अंदर,
दुश्मन थर थर कापे देखकर,
दुम दबाकर भागे देखकर,
पृथ्वी से चांद तक लहर हमारी,
समुद्र नापती पनडुब्बी सारी,
तेजस त्राहि त्राहि मचाये,
ब्रह्मोस दुश्मन को ना भाए,
सम्मान में हम शीश नवाते,
जो नजर उठाए शीश गवादे,
तत्पर है जनमानस मेरा,
बैरी राम नाम सत्य तेरा,
नए समय की नई रीत है,
दोनों गाल से हमे प्रीत है,
थप्पड़ का ना मौका देंगे,
आँख दिखाओ नोच हम लेंगे,
उंगली उठी तो हाथ टूटेगा,
इट का जवाब पत्थर से होगा।
सुनो रीत बदल दी हमने,
मूर्खों से प्रीत बदल दी हमने,
शस्त्र शास्त्र के हम ही ज्ञाता,
अधर्म पर धर्म विजय पता,
दुश्मन को हम चिन्हित करते,
उसके घर में धर दबोचते,
घूंट घूंट पानी को तरसेगा,
दुश्मन पर बस आग बरसेगा।

– मंजू शर्मा

धन्यवाद

Mahakaal Ki Kripa Se
Sab Kaam Ho Raha Hai

Amit Pathak's
साहित्य
संगम बुक्स

साहित्य संगम बुक्स

फुसरो, बोकारो, झारखंड
संपर्क सूत्र : 8935857296
9304444946
www.sahityasangambooks.in

ISBN: 978-8-19864-911-9
9 788198 649119

Price : 399.00/–